अललाह केन ाम से जो बडा मेहेरबान और रहम वाला है

कुरआन और नमाज़ को समझना शुरू कीजिये

आसान तरीके से

शॉर्ट कोर्स

सूरह अलफ़ातिहा, 6 सूरतें, नमाज़ के अज़कार और चंद दुआओं वग़ैरह की मदद से 100 मूख्य शब्दों को समझना और याद रखना जो कुरआन में तक़रीबन 40,000 बार आये हैं (कुल तक़रीबन 77,800 में से), यानी कुरआन के 50% शब्द!!!

नोट इस कोर्स में शब्दों के सिर्फ़ बुनयादी माने ही दिये गये हैं। बाज़ शबदों के दूसरे माने भी हो सकते हैं।

मक़सद कुरआन को समझना आसान लगे, हिम्मत अफ़ज़ाई हो, आगे की तालीम मज़ीद आसान हो, कुरआन के साथ तआमुल (Interaction) यानी तदब्बुर व तज़क्कुर स्पष्ट हो।

लेखक

डॉक्टर अब्दुल अज़ीज अबदुल रहीम

डाएरेक्टर, अन्डरस्टेंड कुरआन अकैडेमी, हैदराबाद

Understand Qur'an Academy – Hyderabad, INDIA

www.understandquran.com

بسم الله الرحمن الرحيم

असबाक़ की लिस्ट

	कुरआन या हदीस	क़वाइद	नुकाते शौक़ व ख़ौफ़
0.	तअरुफ़		
1.	सूरह अल फ़ातिहा (1-4)	هُوَ، هُمْ، ...	
2.	सूरह अल फ़ातिहा (5-7)	هُوَ مُسْلِم، هُمْ مُسْلِمُون، ...	
3.	सूरह अल अस्र	رَبُّهُ،.. دِينُهُ،.. كِتَابُهُ،..	
4.	सूरह अल नसर	لَ، مِنْ، عَنْ، مَعَ	
5.	**इआदा** (Revision)	ب، فِي، عَلَى، إِلَى	
6.	सूरह अल इख़लास	فَعَلَ، فَعَلُوا، فَعَلْتَ، فَعَلْتُمْ، فَعَلْتُ، فَعَلْنَا	
7.	सूरह अल फ़लक़	فَعَلَ، فَعَلُوا، فَعَلْتَ، فَعَلْتُمْ، فَعَلْتُ، فَعَلْنَا	
8.	सूरह अल नास	يَفْعَلُ، يَفْعَلُونَ، تَفْعَلُ، تَفْعَلُونَ، أَفْعَلُ، نَفْعَلُ	
9.	**इआदा** (Revision)	يَفْعَلُ، يَفْعَلُونَ، تَفْعَلُ، تَفْعَلُونَ، أَفْعَلُ، نَفْعَلُ	
10.	सूरह अल काफ़िरुन	إِفْعَلْ، إِفْعَلُوا، لاَ تَفْعَلْ، لاَ تَفْعَلُوا	
11.	वज़ू के अज़कार	فَاعِل، مَفْعُول، فِعْل	
12.	इक़ामत और सना	فَعَلَ Table	
13.	रुकू सजदा और तशह-हुद	فَتَحَ، يَفْتَحُ، افْتَحْ،...جَعَلَ، يَجْعَلُ، اجْعَلْ...	
14.	दरुद	نَصَرَ، يَنْصُرُ، اُنْصُر،...خَلَقَ، يَخْلُقُ، اُخْلُقْ...	
15.	दरुद के बाद	كَفَرَ، يَكْفُرُ، اُكْفُر... ذَكَرَ، يَذْكُرُ، اُذْكُرْ...	
16.	दुआऐं सोने और खाने पर	رَزَقَ، يَرْزُقُ... دَخَلَ، يَدْخُلُ... عَبَدَ، يَعْبُدُ...	
17.	**इआदा** (Revision)	ضَرَبَ، يَضْرِبُ... ظَلَمَ، يَظْلِمُ... غَفَرَ، يَغْفِرُ...	
18.	कुरआनी दुआऐं	سَمِعَ، يَسْمَعُ... عَلِمَ، يَعْلَمُ... عَمِلَ، يَعْمَلُ...	
19.	मुतफ़र्रिक़ात -1	قَالَ، يَقُولُ، قُلْ... كَانَ، يَكُونُ، كُنْ...	
20.	मुतफ़र्रिक़ात -2	دَعَا، يَدْعُوا،... شَاءَ، يَشَاءُ، جَاءَ، يَجِيءُ،	
21.	**इआदा** (Revision)	هٰذا، هٰؤلاء، ذٰلِكَ، أُولٰئِكَ، الَّذِي، الَّذِينَ	
22.	बार बार आनेवाले अलफ़ाज़ -1	–	
23.	बार बार आनेवाले अलफ़ाज़ -2	–	
24.	इस कोर्स के बाद?	–	

अहेम हिदायत

कोर्स सीखने की शर्त: आपको अरबी कुरआन और हिन्दी पढ़ना आना चाहिये ।

दौरानिया: 9 घन्ठे (दो या तीन क्लासेस में)

इस शोर्ट कोर्स को अच्छी तरह सीखने के लिये चन्द बातें याद रखये :

- हम आराम से बग़ैर किसी दबाव के सीखेंगे ।
- ये पूरी तरह पारस्परिक (interactive) शोर्ट कोर्स है इस लिये ध्यान से सुनिये और लगातार अभ्यास भाग लेते रहिये ।
- प्रेक्टिस याने अभ्यास करते हुऐ अगर ग़लती हो तो कोई बात नहीं ।
- जो ज़ियादा प्रेक्टिस करेगा वह उतना ही ज़ियादा सीखेगा । यह सुनेहरी क़ायेदा याद रखिये:
- I listen, I forget;
- I see, I remember;
- I practice, I learn;
- I teach, I master.

सात होम वर्कस को करना बिलकुल न भूलिये : (2 तिलावात के, 2 पढ़ने के, 2 सुन्ने और सुनाने के, और 1 इस्तेमाल करने का)

1. कम से कम 5 मिनट मुसहफ़ (कुरआन) देख कर तिलावत करना ।
2. कम से कम 5 मिनट बग़ेर देखे अपने हाफ़ज़े से (जो भी याद हो) तिलावत करना ।
3. कम से कम 5 मिनट पिछले और अगले सबक़ का इस किताब से मुतालआ ।
4. कम से कम 5 बार हो सके तो 5 नमाज़ों से पहले या बाद में या जैसा भी मौक़ा मिले) सिर्फ़ 30 सेकन्ड यानी सिर्फ़ आधे मिनट के लिये शब्द और मानि के पन्ने से (जो इस कोर्स के साथ दिया गया है) मुताल्आ करना ।
5. टेप रिकार्ड या CD से इन आयात और अज़कार के शब्दों के अनुवाद को सुनना ।
6. दिन में कम अज़ कम एक मिनट अपने कलास के दोस्तों से सबक़ के सम्बन्ध से बात करना ।
7. जो सूरतें आपको याद हों, उन को नमाज़ों में पढ़ते रहना ।

दो मज़ीद होमवर्कस भी याद रखिये: (1) खुद के लिये दुआ और (2) अपने साथियों के लिये दुआ कि अल्लाह हमें कुरआन के हक़ूक़ अदा करने की तौफ़ीक़ दे और हमारे साथियों को भी ।

सबक़ – 0 कुछ अहेम बातें

1: كِتَابٌ	أَنزَلْنَاهُ	إِلَيْكَ	مُبَارَكٌ
(यह) किताब	हम ने उतारा है उसको	आप की तरफ़	बरकत वाली है
لِّيَدَّبَّرُوا	آيَاتِه	وَلِيَتَذَكَّرَ	أُولُوا الْأَلْبَابِ (ص: 29)
ता कि वह ग़ौर करें	उस की आयात पर	और ता कि नसीहत पकड़ें	अ़क़्ल वाले ।

2: وَلَقَدْ	يَسَّرْنَا	الْقُرْآنَ	لِلذِّكْرِ
और अलबत्ता तहक़ीक	हम ने आसान किया	क़ुरआन को	ज़िक्र के लिये
فَهَلْ	مِن مُّدَّكِرٍ (قمر: 17، 22، 32، 40)		
तो है कोई	नसीहत हासिल करने वाला ।		

ذِكْر (1) याद करना, (2) नसीहत हासिल करना

3: خَيْرُكُمْ	مَّنْ	تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ	وَعَلَّمَه (بخاری)
तुम में से बेहतरीन	(वह है) जो	क़ुरआन को सीखे	और सिखाए उस को ।

==========

1:	إِنَّمَا الْأَعْمَالُ	بِالنِّيَّاتِ	(بخاری)
	आमाल तो बस	निय्यतों पर हैं ।	

2: رَبِّ	زِدْنِي	عِلْمًا	(طه : 114)
ऐ मेरे रब	ज़्यादा कर मझे	इल्म में ।	

3: الَّذِي	عَلَّمَ	بِالْقَلَمِ	(العلق: 4)
जिस ने	सिखाया	क़लम से	

4: أَيُّكُمْ	أَحْسَنُ	عَمَلاً	(الملك: 2)
कौन तुम में से	बहतर होगा	अ़मल में	

सबक़ – 1 सूरह अल फ़तिहा (आयात -1-4)

* मै पनाह मे आता हूँ अल्लाह की शैतान मरदूद से ।

---

1. अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहेरबान रहेम करने वाला है ।

2. तमाम तारीफ़े अल्लाह के लिये है जो तमाम जहानो का रब है ।

3. बहुत मेहेरबान रहेम करने वाला है ।

4. बदले के दिन का मालिक है ।

أَعُوذُ	بِاللهِ	مِنَ الشَّيْطَانِ	الرَّجِيمِ ۞
जो मरदूद है	शैतान से	अल्लाह की	मै पनाह मे आता हूँ
********** سُورَةُ الْفَاتِحَة: بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ **********			
بِسْمِ	اللهِ	الرَّحْمٰنِ	الرَّحِيمِ (1)
रहेम करने वाला है ।	जो बहुत मेहेरबान	अल्लाह के	नाम से
أَلْحَمْدُ	لِلهِ	رَبِّ	الْعَالَمِينَ (2)
तमाम जहानो का ।	रब है	अल्लाह के लिये	तमाम तारीफ़े
الرَّحْمٰنِ	الرَّحِيمِ (3)	مَالِكِ	يَوْمِ	الدِّينِ (4)
बदले का ।	दिन	मालिक है	रहेम करने वाला है ।	बहुत मेहेरबान

<u>ग्रामर:</u> यह छः शब्द कुरआन करीम में 1295 बार आये हैं, इन की TPI के तरीक़े से अच्छी तरह प्रेक्टिस कर लीजिये । यह तरीक़ा नीचे बताया जारहा है ।

1. जब आप **هُوَ** (वह) कहें तो सीधे हाथ की तशह-हुद की उँगली से दाऐं तरफ़ इशारा करें, गोया वह शख्स आपकी दाऐं तरफ़ बैठा हुआ है । फिर जब आप **هُمْ** (वह सब) कहें तो सीधे हाथ की चारों उँगलियों से दाऐं तरफ़ इशारा करें ।
2. जब आप **أَنْتَ** (आप) कहें तो सीधे हाथ की तशह-हुद की उँगली से सामने की तरफ़ बैठे हुऐ आदमी की तरफ़ इशारा करें । फिर जब आप **أَنْتُمْ** (आप सब) कहें तो सीधे हाथ की चारों उँगलियों से सामने सारे लोगों की तरफ़ इशारा करें । अगर क्लास चल रही हो तो उसताद पढ़ने वालों की तरफ़ और पढ़ने वाले उसताद की तरफ़ इशारा करें ।
3. जब आप **أَنَا** (मैं) कहें तो सीधे हाथ की तशह-हुद की उँगली से खुद की तरफ़ इशारा करें । फिर जब आप **نَحْنُ** (हम) कहें तो सीधे हाथ की चारों उँगलियों से खुद की तरफ़ इशारा करें ।

Detached / Personal Pronouns		No.	Person
वह	هُوَ	sr.	3rd
वह सब	هُمْ	pl.	
आप	أَنْتَ	sr.	2nd
आप सब	أَنْتُمْ	pl.	
मैं	أَنَا	sr.	1st
हम	نَحْنُ	dl., pl.	

पहले तीन बार इन शब्दों को तरजुमे (अनुवाद) के साथ पढ़ये यानी **هُوَ** (वह) **هُمْ** (वह सब) **أَنْتَ** (आप) **أَنْتُمْ** (आप सब) **أَنَا** (मैं) **نَحْنُ** (हम सब) । इस के बाद तरजुमा करने की ज़रूरत नहीं ।

सबक़ – 2 सूरह अल फ़तिहा (आयात -5-7)

5. हम सिर्फ़ तेरी ही इबादत करते हैं और सिर्फ़ तुझ ही से मद्द चाहते हैं।

6. हमें सीधे रास्ते की हिदायत दे।

7. उन लोगों का रास्ता जिन पर तू ने इन्आम किया, न उनका जिनपर ग़ज़ब किया गया और न उनका जो गुम्राह हुऐ।

إِيَّاكَ	نَعْبُدُ	وَإِيَّاكَ	نَسْتَعِينُ (5)
सिर्फ़ तेरी ही	हम इबादत करते हैं	और सिर्फ़ तुझ ही से	हम मद्द चाहते हैं।
اهْدِنَا	الصِّرَاطَ	الْمُسْتَقِيمَ (6)	
हमें हिदायत दे	रास्ते की	सीधे	
صِرَاطَ	الَّذِينَ	أَنْعَمْتَ	عَلَيْهِمْ
रास्ता	उन लोगों का	तू ने इन्आम किया	उन पर
غَيْرِ	الْمَغْضُوبِ	عَلَيْهِمْ	وَلاَ	الضَّآلِّينَ (7)
ग़ज़ब किया गया	न	उन पर	और न	जो गुम्राह हुऐ।

ग्रामर:

पहले तीन बार इन अलफ़ाज़ को तरजुमे के साथ पढ़ये यानी **هُوَ** (वह) **هُمْ** (वह सब) **أَنْتَ** (आप) **أَنْتُمْ** (आप सब) **أَنَا** (मैं) **نَحْنُ** (हम सबस के बाद तरजुमा करने की ज़रूरत नहीं

Pronouns (with examples)		No.	Person
वह एक मुसलमान है	هُوَ مُسْلِم	sr.	3rd
वह सब मुसलमान हैं	هُمْ مُسْلِمُونَ	pl.	
आप एक मुसलमान हैं	أَنْتَ مُسْلِم	sr.	2nd
आप सब मुसलमान हैं	أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ	pl.	
मैं एक मुसलमान हूँ	أَنَا مُسْلِم	sr.	1st
हम मुसलमान हैं	نَحْنُ مُسْلِمُونَ	dl., pl.	

जमा (plural) बनाने का एक तरीक़ा यह है कि आप शब्द के आगे ون या ين लगाएं जैसा नीचे दिया गया है।

مُسْلِم ← مُسْلِمُون، مُسْلِمِين　　مُؤْمِن ← مُؤْمِنُون، مُؤْمِنِين

صَالِح ← صَالِحُون ، صَالِحِين　　كَافِر← كَافِرُون ،كَافِرِين

مُشْرِك← مُشْرِكُون، مُشْرِكِين　　مُنَافِق ← مُنَافِقُون، مُنَافِقِين

अब आप बग़ैर तरजुमा किये प्रेक्टिस करते रहिये। हाथ का इशारा खुद बतादेगा कि आपकी मुराद क्या है। इशारों के इस्तमाल करने के कई फ़ायदों में से यह पहला अहेम फ़ायदा है। इस तरह से न सिर्फ़ सीखना आसान होगा बल्कि दिल्चस्प भी। चार पांच मिनट की प्रेक्टिस में आप यह छः अलफ़ाज़ जो क़ुरआन करीम में 1295 बार आये हैं, अच्छी तरह सीख लेंगे। हो सकता है कि आपको पहली बार इशारे करने में झिझक हो मगर क़ुरआन के अलफ़ाज़ याने शब्द सीखने में, अफ़आल के विभिन्न सेग़े और उनके विभिन्न अबवाब सीखने में यह तरीक़ा बहुत सफ़ल साबित होगा। इन्शा अललाह, यह कहा जा सक्ता है कि क़ुरआन के तक़रीबन 25% अलफ़ाज़ को इन इशारों की मदद से आसानी से सीखा जा सकता है।

नुकता शौक़ या नुकता खौफ़ और तालीमी नुकता (जगह न हो तो इस सफ़ेह के पीछे नोट कीजिये):

सबक़ – 3 सूरह 103 अल अस्र

1. ज़माने की क़सम,

2. बेशक इन्सान ख़सारे में है,

3. सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और उन्हों ने नेक अमल किए
और एक दूसरे को हक़ की वसीयत की और सब्र की वसीयत (तलक़ीन) की ।

********************* سُورَةُ العَصْر: بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ *********************					
إِلَّا	خُسْرٍ (2)	لَفِي	الْإِنسَانَ	إِنَّ	وَالْعَصْرِ (1)
सिवाए	ख़सारे	में	इन्सान	बेशक	क़सम ज़माने की
الصَّالِحَاتِ		وَعَمِلُوا	آمَنُوا		الَّذِينَ
नेक		और उन्हों ने अमल किए	ईमान लाए		(उन के) जो
بِالصَّبْرِ (3)		وَتَوَاصَوْا	بِالْحَقِّ		وَتَوَاصَوْا
सब्र की ।		और एक दूसरे को वसीय्यत की	हक़ की		और एक दूसरे को वसीय्यत की

ग्रामर:

book ... + كِتَاب		way of life ... + دِين		... + رَبّ		Attached/Possessive		No.	Person
उसकी किताब	كِتَابُهُ	उसका मज़हब / तरीक़ा ज़िन्दगी	دِينُهُ	उसका रब	رَبُّهُ	उसका	ـــهُ ـــهٖ	sr.	3rd
उनकी किताब	كِتَابُهُمْ	उनका मज़हब / तरीक़ा ज़िन्दगी	دِينُهُمْ	उनका रब	رَبُّهُمْ	उनका	ـــهُمْ ـــهِمْ	pl.	
आपकी किताब	كِتَابُكَ	आपका मज़हब / तरीक़ा ज़िन्दगी	دِينُكَ	आपका रब	رَبُّكَ	आपका	ـــكَ	sr.	2nd
आप सब की किताब	كِتَابُكُمْ	आप सब का मज़हब / तरीक़ा ज़िन्दगी	دِينُكُمْ	आप सब का रब	رَبُّكُمْ	आप सब का	ـــكُمْ	pl.	
मैरी किताब	كِتَابِي	मेरा मज़हब / तरीक़ा ज़िन्दगी	دِينِي	मेरा रब	رَبِّي	मेरा	ـــي	sr.	1st
हमारी किताब	كِتَابُنَا	हमारा मज़हब / तरीक़ा ज़िन्दगी	دِينُنَا	हमारा रब	رَبُّنَا	हमारा	ـــنَا	dl., pl.	

स्त्री लिंग या औरत के लिये :

उसकी किताब :كِتَابُهَا ، उसका दीन :دِينُهَا ، उसका रब:رَبُّهَا ، वह:هِيَ

स्त्री लिंग बनाना हो तो शब्द के आख़िर में ة लगाएं । उसकी जमा (plural) बनाने का तरीक़ा यह है कि आप शब्द के आख़िर में ة हटा कर ات लगाएं जैसा नीचे दिया गया है ।

مُسْلِمٌ ← مُسْلِمَة مُسْلِمَات   مُؤْمِن ← مُؤْمِنَة مُؤْمِنَات

صَالِح ← صَالِحَة صَالِحَات   كَافِر ← كَافِرَة كَافِرَات

مُشْرِك ← مُشْرِكَة مُشْرِكَات   مُنَافِق ← مُنَافِقَة مُنَافِقَات

नुकता शौक़ या नुकता खौफ़ और तालीमी नुकता :

सबक़ – 4 सूरह 110 अल नस्र

1. जब अल्लाह की मदद आजाए और फ़तह (हो जाए)

2. और आप देखें लोग दाख़िल हो रहे हैं अल्लाह के दीन में फ़ौज दर फ़ौज,

3. पस अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकी बयान करें और उस से बख़्शिश तलब करें, बेशक वह बड़ा तौबा क़ुबूल करने वाला है ।

************************* سُورَةُ النَّصر: بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ ***************************

وَالْفَتْحُ (1)	نَصْرُ اللهِ	جَآءَ	إِذَا
और फ़तह	अल्लाह की मदद	आजाए	जब

أَفْوَاجًا (2)	فِي دِينِ اللهِ	يَدْخُلُونَ	النَّاسَ	وَرَأَيْتَ
फ़ौज दर फ़ौज	अल्लाह के दीन में	दाख़िल हो रहे हैं	लोग	और आप (स) देखें

رَبِّكَ	بِحَمْدِ	فَسَبِّحْ
अपने रब की	तारीफ़ के साथ	पस पाकी बयान करें

كَانَ تَوَّابًا (3)	إِنَّهُ‘	وَاسْتَغْفِرْهُ
बड़ा तौबा क़ुबूल करने वाला है ।	बेशक वह	और उस से बख़्शिश तलब करें ।

ग्रामर:

नीचे दिये गये चार शब्द (हरूफ़े जर) के माने याद रखने लिये उन के उदाहरण को भी अच्छी तरह याद रखिये ।

لَ: لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ،

مِن: أَعُوذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ،

عَن: عَنِ النَّعِيمِ، رَضِيَ اللهُ عَنهُ

مَعَ: إِنَّ اللهَ مَعَ الصَّابِرِين

यह याद रहे कि इन शब्दों के दूसरे माने भी हो सकते हैं । इस की तफ़सील नीचे दी गई है ।

साथ	से, बारे में	से, साथ	लिये
مَعَه‘	عَنْهُ	مِنْهُ	لَه‘
مَعَهُمْ	عَنْهُمْ	مِنْهُمْ	لَهُمْ
مَعَكَ	عَنْكَ	مِنْكَ	لَكَ
مَعَكُمْ	عَنْكُمْ	مِنْكُمْ	لَكُمْ
مَعِي	عَنِّي	مِنِّي	لِي
مَعَنَا	عَنَّا	مِنَّا	لَنَا
مَعَهَا	عَنْهَا	مِنْهَا	لَهَا

इन शब्दों का तरजुमा अस्ल ज़ुबान और तरज़ुमे की ज़ुबान के हिसाब से होता है । इस के लिये हर ज़ुबान का अपना तरीक़ा है जैसे

آمَنْتُ بِاللهِ   I believed in Allah;   मैं अल्लाह पर ईमान लाया

ये तीनौं ज़ुमले (वाक्य) तीन ज़ुबानों में एक ही बात को ब्यान कर रहे हैं मगर हर ज़ुबान में एक अलग ही शब्द इस्तेमाल हुआ है ।

नुकता शौक़ या नुकता खौफ़ और तालीमी नुकता :

सबक़ – 5 इआ़दा REVISION

अब तक जो कुछ पढ़ा है उसका इआदा कीजिये ।

ग्रामर : (नया सबक़):

नीचे दिये गये चार शब्द के माने याद रखने लिये उन की मिसालों (उदाहरणों) को भी अच्छी तरह याद रखिये ।

ب: بِسْمِ الله

فِي: فِي سَبِيلِ الله

عَلَى: السَّلامُ عَلَيْكُمْ

إِلَى: إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُون

ये याद रहे कि जब यह हरूफ़ जर, फ़ेल, इस्म फ़ाइल या इस्म मफ़ऊल के साथ आये तो उसके मानि बदल सक्ते हैं ।

तरफ़	पर	में	से, साथ
إِلَيْه	عَلَيْه	فِيه	بِه،
إِلَيْهِمْ	عَلَيْهِمْ	فِيهِمْ	بِهِمْ
إِلَيْكَ	عَلَيْكَ	فِيكَ	بِكَ
إِلَيْكُمْ	عَلَيْكُمْ	فِيكُمْ	بِكُمْ
إِلَيَّ	عَلَيَّ	فِيَّ	بِي
إِلَيْنَا	عَلَيْنَا	فِينَا	بِنَا
إِلَيْهَا	عَلَيْهَا	فِيهَا	بِهَا

कभी इस शब्द (हरफ़े-जर) की ज़रूरत अरबी में पड़ती है मगर दूसरी ज़ुबान में नहीं । नीचे इन्गलिश की मिसाल दी गई है ।

entering the religion of Allah	يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللهِ
Forgive me	اغْفِرْلِي

कभी इसकी ज़रूरत अरबी में नहीं पड़ती मगर दूसरी ज़ुबान में पड़ती है ।

मैं बख़शिश माँगता हूँ अल्लाह से	أَسْتَغْفِرُ الله
और मुझ पर रहेम फ़रमा	وَارْحَمْنِي

सबक़ – 6 सूरह 112 अल इख़लास

********** سورة الإخلاص : بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ **********				
قُلْ	هُوَ	اللهُ	أَحَدٌ (1)	اَللهُ
कह दीजिए	वह	अल्लाह	एक है।	अल्लाह
الصَّمَدُ (2)	لَمْ يَلِدْ		وَلَمْ	يُولَدْ (3)
बेनियाज़ है।	न उस ने (किसी को) जना		और न	वह जना गया।
وَ لَمْ يَكُن	لَّهٗ		كُفُوًا	أَحَدٌ (4)
और नहीं है	उस का		हमसर	कोई।

1. कह दीजिए वह अल्लाह एक है,
2. अल्लाह बेनियाज़ है,
3. न उस ने (किसी को) जना और न वह जना गया,
4. और उस का कोई हमसर नहीं।

ग्रामर: फ़ेले-माज़ी के दिये गये छः सेग़ों की TPI के तरीक़े से अच्छी तरह प्रेक्टिस कीजिये। यह तरीक़ा नीचे बताया जारहा है।

1. जब आप **فَعَلَ** (उस ने किया) कहें तो सीधे हाथ की तशह-हुद की उँगली से दाऐं तरफ़ इशारा करें, गोया वह आदमी आपकी दाऐं तरफ़ बैठा हुआ है। फिर जब आप **فَعَلُوا** (उन्हों ने किया) कहें तो सीधे हाथ की चारों उँगलियों से दाऐं तरफ़ इशारा करें।
2. जब आप **فَعَلْتَ** (आपने किया) कहें तो सीधे हाथ की तशह-हुद की उँगली से सामने की तरफ़ बैठे हुऐ आदमी की तरफ़ इशारा करें। फिर जब आप **فَعَلْتُمْ** (आप सबने किया) कहें तो सीधे हाथ की चारों उँगलियों से सामने इशारा करें। अगर क्लास चल रही हो तो उसताद पढ़ने वालों की तरफ़ और पढ़ने वाले उसताद की तरफ़ इशारा करें।
3. जब आप **فَعَلْتُ** (मैं ने किया) कहें तो सीधे हाथ की तशह-हुद की उँगली से खुद की तरफ़ इशारा करें। फिर जब आप **فَعَلْنَا** (हमने किया) कहें तो सीधे हाथ की चारों उँगलियों से खुद की तरफ़ इशारा करें।

Person	فعل ماضي Past Tense	
3rd	فَعَلَ	उस ने किया
	فَعَلُوا	उन सब ने किया
2nd	فَعَلْتَ	आप ने किया
	فَعَلْتُمْ	आप सब ने किया
1st	فَعَلْتُ	मैं ने किया
	فَعَلْنَا	हम सब ने किया

नुक्ता शौक़ या नुक्ता खौफ़ और तालीमी नुक्ता (जगह न हो तो इस सफ़ेह के पीछे नोट कीजिये) :

सबक़ – 7 सूरह 113 अल फ़लक़

********** سورة الفلق : بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ **********			
قُلْ	أَعُوذُ	بِرَبِّ	الْفَلَقِ (1)
कह दीजिए	मैं पनाह में आता हूँ	रब की	सुब्ह के ।
مِن	شَرِّ	مَا	خَلَقَ (2)
से	शर	(उस के) जो	उस ने पैदा किया
وَمِن شَرِّ	غَاسِقٍ	إِذَا	وَقَبَ (3)
और शर से	अन्धेरे के	जब	(वह) छा जाए
وَمِن شَرِّ	النَّفَّاثَاتِ		فِي الْعُقَدِ (4)
और शर से	फूंके मारने वालियों के		गिरहों में
وَمِن شَرِّ	حَاسِدٍ	إِذَا	حَسَدَ (5)
और शर से	हसद करने वाले के	जब	वह हसद करे

1. कह दीजिए, मैं पनाह में आता हूँ सुब्ह के रब की,

2. उस के शर से जो उस ने पैदा की,

3. और अन्धेरे के शर से, जब वह छा जाए,

4. और गिरहों में फूंके मारने वालियों के शर से,

5. और शर से हसद करने वाले के जब वह हसद करे ।

ग्रामर: फ़ेल-माज़ी के सेगों के fonts को italics बनादिया गया है । काम हो गया इसलिये इसके अलफ़ाज़ झुका दिये गये :

- फ़ेल माज़ी (ग़ायब, हाज़िर या मुतकल्लिम के लिये वाहिद याने एक, मुसन्ना याने दो, जमा) के सेगे अपनी मुख़तलिफ़ (विभिन्न) हालतों में अपने आख़री हरूफ़ (शब्दों) को बदलते रहते है । इन हरूफ़ की तबदीली से यह पता चलता है कि यह फ़ेल वाहिद है या जमा, हाज़िर (सामने वाला) है या मुतकल्लिम (बोलने वाला) वग़ैरह । इसी बात को आसानी से याद कराने के लिये तसवीरों से समझाने की कोशिश की गई है । अगर आप किसी सड़क पर खड़े हों तो आपको जाने वाली कार, ट्रक या जीप का सिर्फ़ पिछला हिस्सा नज़र आता है । पिछले हिस्से को देख कर आप कह सकते है कि यह कौन सी चीज़ थी जो चली गई । अगर आप रनवे पर खड़े हों तो उड़ते हुऐ हवाई जहाज़ (जो चला गया गोया माज़ी हो गया) का सिर्फ़ पिछला हिस्सा नज़र आऐगा, जिसकी दुम पर यह तबदीलियाँ وا تَ، تُم، تُ، نَا बताई गई हैं ।

Person	فعْل مَاضِي Past Tense	
3rd	فَعَلَ	उस ने किया
	فَعَلُوا	उन सब ने किया
2nd	فَعَلْتَ	आप ने किया
	فَعَلْتُمْ	आप सब ने किया
1st	فَعَلْتُ	मैं ने किया
	فَعَلْنَا	हम ने किया

नुकता शौक़ या नुकता खौफ़ और तालीमी नुकता (जगह न हो तो इस सफ़ेह के पीछे नोट कीजिये)

सबक़ – 8 सूरह 114 अल नास

1. कह दीजिए मैं पनाह में आता हूँ लोगों के रब की,

2. लोगों के बादशाह की,

3. लोगों के माबूद की,

4. वस्वसा डालने वाले, छुप छुप कर हमला करने वाले के शर से,

5. जो वस्वसा डालता है लोगों के दिलों में,

6. जिन्नों में से और इन्सानों में से।

************************ سورة النّاس : بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ ************************			
قُلْ	أَعُوذُ	بِرَبِّ	النَّاسِ (1)
कह दीजिए	मैं पनाह में आता हूँ	रब की	लोगों के,
مَلِكِ النَّاسِ (2)		إِلٰـــهِ النَّاسِ (3)	
लोगों के बादशाह की,		लोगों के माबूद की,	
مِن شَرِّ	الْوَسْوَاسِ	الْخَنَّاسِ (4)	
शर से	वस्वसा डालने वाले	छुप कर हमला करने वाले के	
الَّذِي	يُوَسْوِسُ	فِي صُدُورِ	النَّاسِ (5)
जो	वस्वसा डालता है	सीनों (दिलों) में	लोगों के
مِنَ الْجِنَّةِ		وَالنَّاسِ (6)	
जिन्नों में से		और इन्सानों (में से)।	

ग्रामर:

- फ़ेले-मुज़ारे की TPI के साथ प्रेक्टिस कीजिये जैसा कि आपने फ़ेले-माज़ी के वक़्त किया था। अलबत्ता यह फ़र्क़ हाद रखा जाये कि फ़ेले-मुज़ारे की प्रेक्टिस करते वक़्त हाथ के इशारे सर की सतह (level) पर हों और आवाज़ ऊँची हो। फ़ेले-माज़ी की प्रेक्टिस करते वक़्त हाथ के इशारे सीने की सतह पर हों और आवाज़ धीमी हो।
- फ़ेले-माज़ी के झुके हुऐ fonts के जगह पर फ़ेले-मुज़ारे के सेग़ों को सीधा (upright) रखा गया है, यानी यह काम हो रहा है या होने वाला है।
- फ़ेले-मुज़ारे के सेग़ों में अहम तबदीली (परिवर्तन) सामने के अलफ़ाज़ में होती है (सिवाऐ आखिर के –ون، --ان، --ين के)। इन तबदीलयों يَ تَ أَ نَ को उतरते हुऐ (यानी हाज़िर या मुसतक़बिल) जहाज़ की नोक पर बताया गया है। यह दोनों तसवीरें सीखने वालों के दिमाग़ में इस बात को बिठाने के लिऐ दिखाई गई हैं कि फ़ेल माज़ी के सेग़ों की दुम बदलती रहती है और फ़ेले-मुज़ारे के सेग़ों का मुंह।

Imperfect tense فِعْل مُضَارِع		Per-son
वह करता है	يَفْعَلُ	3rd
वह करते हैं	يَفْعَلُون	
आप करते हैं	تَفْعَلُ	2nd
आप सब करते हैं	تَفْعَلُون	
मैं करता हूँ	أَفْعَلُ	1st
हम करते हैं	نَفْعَلُ	

नुकता शौक़ या नुकता खौफ़ और तालीमी नुकता (जगह न हो तो इस सफ़ेह के पीछे नोट कीजिये)

सबक़ – 9 इआदा

अब तक जो कुछ पढ़ा है उसका इआदा (repeat) कीजिये ।

ग्रामर: फ़ेले-माज़ी और फ़ेल मज़ारे की TPI के साथ प्रेक्टिस कीजिये ।

Imperfect tense فِعْل مُضَارِع		Past Tense فِعْل مَاضِي		Per-son
वह करता है	يَفْعَلُ	उस ने किया	فَعَلَ	3rd
वह करते हैं	يَفْعَلُون	उन सब ने किया	فَعَلُوا	
आप करते हैं	تَفْعَلُ	आप ने किया	فَعَلْتَ	2nd
आप सब करते हैं	تَفْعَلُون	आप सब ने किया	فَعَلْتُمْ	
मैं करता हूँ	أَفْعَلُ	मैं ने किया	فَعَلْتُ	1st
हम करते हैं	نَفْعَلُ	हम ने किया	فَعَلْنَا	

सबक़ – 10 सूरह 109 अल काफ़िरून

1. कह दीजिए - ऐ काफ़िरो!
2. मैं इबादत नहीं करता जिस की तुम इबादत करते हो ।
3. और न तुम! इबादत करने वाले हो उस की जिस की मैं इबादत करता हूँ,
4. और न मैं इबादत करने वाला हूँ जिस की तुम इबादत करते हो,
5. और न तुम इबादत करने वाले जिस की मैं इबादत करता हूँ ।
6. तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मेरे लिए मेरा दीन ।

******************** سُورَةُ الْكَافِرُون: بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ ********************

(2) تَعْبُدُونَ	مَا	لَا أَعْبُدُ	(1) الْكَافِرُونَ	يَاأَيُّهَا	قُلْ
तुम इबादत करते हो	जिस की	नहीं मैं इबादत करता	काफ़िरो !	ऐ	कह दीजिए

(3) أَعْبُدُ	مَآ	عَابِدُونَ	وَلَا أَنتُمْ
मैं इबादत करता हूँ	जिस की	इबादत करने वाले हो	और न तुम
(4) عَبَدْتُّمْ	مَّا	عَابِدٌ	وَلَا أَنَا
तुम ने इबादत की	जिस की	इबादत करने वाला	और न मैं
(5) أَعْبُدُ	مَآ	عَابِدُونَ	وَلَا أَنتُمْ
मैं इबादत करता हूँ	जिस की	इबादत करने वाले	और न तुम
(6) دِينِ	وَلِيَ	دِينُكُمْ	لَكُمْ
मेरा दीन	और मेरे लिए	तुम्हारा दीन	तुम्हारे लिए

ग्रामर: फ़ेल के साथ ज़माइर, मफ़ऊल-बिही (objects) बन जाते हैं । एक फ़ेल के साथ मिसाल (उदाहरण) देखिये ।

उस (अल्लाह) ने पैदा किया ... + خَلَقَ		**Attached/Possessive (with a VERB)**		**No.**	**Person**
पैदा किया उस को	خَلَقَهٗ	उस को	ـهٗ-- ـهٖ--	*sr.*	3rd
पैदा किया उन को	خَلَقَهُمْ	उन को	ـهُمْ-- ـهِمْ--	*pl.*	
पैदा किया आप को	خَلَقَكَ	आप को	ـكَ---	*sr.*	2nd
पैदा किया आप सब को	خَلَقَكُمْ	आप सब को	ـكُمْ---	*pl.*	
पैदा किया मुझ को	خَلَقَنِي	मुझ को	ـنِي--- ***	*sr.*	1st
पैदा किया हम को	خَلَقَنَا	हम को	ـنَا---	*dl., pl.*	

अमर व नहीं की TPI के साथ प्रेक्टिस कीजिये ।

1. اِفْعَلْ कहते वक़्त तशह-हुद की उँगली से सामने की तरफ़ इस तरह (हाथ को थोड़ा ऊपर से नीचे की तरफ़ लाते हुऐ) इशारा करें जैसे आप सामने वाले को हुक्म दे रहे हों । اِفْعَلُوا के लिये यही इशारा चारों उँगलियों से किया जाये ।
2. لَا تَفْعَلْ कहते वक़्त तशह-हुद की उँगली से सामने की तरफ़ इस तरह (हाथ को बाएँ से दाएँ तरफ़ लाते हुऐ) इशारा करें जैसे आप सामने वाले को मना कर रहे हों । لَا تَفْعَلُوا के लिये यही इशारा चारों उँगलियों से किया जाये ।

Negative Imperative نَهْي	Imperative أَمْر
मत कर لَا تَفْعَلْ	कर اِفْعَلْ
मत करो لَا تَفْعَلُوا	करो اِفْعَلُوا

नुकता शौक़ या नुकता खौफ़ और तालीमी नुकता (जगह न हो तो इस सफ़ेह के पीछे नोट कीजिये)

सबक़ – 11 वज़ू (नमाज़ के अज़कार)

* अल्लाह के नाम से.	***** वज़ू से पहले की दुआ (Wudu) *****					
					اللهِ	بِسْمِ
					अल्लाह के।	नाम से
	***** वज़ू के बाद की दुआ (Wudu) *****					
* मैं गवाही देता हूँ कि कोई (हक़ीक़ी) माबूद नहीं है सिवाए अल्लाह के	اللهُ	إِلاَّ	إِلــٰــهَ	لاَّ	أَنْ	أَشْهَدُ
	अल्लाह के	सिवाए	कोई माबूद	नहीं है	कि	मैं गवाही देता हूँ
वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं	لَهٗ		لاَ شَرِيكَ		وَحْدَهٗ	
	उसका		नहीं कोई शरीक		वह अकेला है,	
और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैही व सल्लम) उसके बन्दे और उसके रसूल हैं।	وَرَسُولُهٗ	عَبْدُهٗ	مُحَمَّدًا	أَنَّ	وَأَشْهَدُ	
	और उसके रसूल हैं।	उसके बन्दे	मुहम्मद (स.)	कि	और मैं गवाही देता हूँ	
ऐ अल्लाह! बना दे मुझे खूब तौबा करने वालों में से और बना दे मुझे पाक साफ़ रहने वालों में से।	مِنَ التَّوَّابِينَ		اجْعَلْنِي		اَللّٰهُمَّ	
	खूब तौबा करने वालों (में) से		बना दे मुझे		ऐ अल्लाह!	
	مِنَ الْمُتَطَهِّرِينَ			وَاجْعَلْنِي		
	पाक साफ़ रहने वालों (में) से			और बना दे मुझे		

ग्रामर:

एक ज़माने में मुसल्मान सारी दुनिया को इल्म, हुनर और टेक्नालोजी देने वाले होते थे, करने वाले होते थे। फ़ाइल (करने वाला) कहते वक़्त सीधे हाथ से देने का इशारा कीजिये। लेने वाला हाथ वह है जिस की मदद की गई, उस पर असर पड़ा, मफ़ऊल (जिस पर असर पड़ा) कहते हुऐ लेने वाले हाथ का इशारा कीजिये। और आख़िर में फ़ेल (काम का नाम, काम करना) कहते वक़्त हाथ की मुट्ठी बना कर कुव्वत का इशारा कीजिये। ये सारे इशारे एक नऐ आदमी के लिये कुछ अजीब से लगते हैं मगर याद रखने की लिये इन इशारों से काम लीजिये। ज़ुबान सीखने के लिये अपने सारे वजूद को (Total physical interaction) जितना इस्तमाल करेंगे, उतना ही फ़ायदा होगा। इन्शाअल्लाह आप खुद देखेंगे कि इस तरीक़े से किस तरह आसानी से यह सारे सेग़े याद हो जाती हैं	active participle; passive participle, and verbal noun	
	करने वाला	فَاعِل
	वह जिस पर असर पड़ा	مَفْعُول
	करना, काम का नाम	فِعْل
	pl. فَاعِلُون، فَاعِلِين	
	pl مَفْعُولُون، مَفْعُولِين.	

नुकता शौक़ या नुकता खौफ़ और तालीमी नुकता (जगह न हो तो इस सफ़ेह के पीछे नोट कीजिये) :

सबक़ – 12 इक़ामत और सना

अल्लाह सबसे बड़ा है. अल्लाह सबसे बड़ा है. मैं गवाही देता हूं कि कोई हक़ीक़ी माबूद नहीं है सिवाए अल्लाह के. मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं. आओ नमाज़ की तरफ़. आओ कामयाबी की तरफ़. तहक़ीक़ (यक़ीनन) खड़ी हो गई नमाज़. (यक़ीनन) खड़ी हो गई नमाज़. अल्लाह सबसे बड़ा है. अल्लाह सबसे बड़ा है. नहीं है कोई माबूद सिवाए अल्लाह के =========
ऐ अल्लाह तू पाक है और तेरे ही लिए तारीफ़ है और तेरा नाम बरकत वाला है, और तेरी बुज़ुर्गी बुलंद व बाला है. और तेरे सिवा कोई (सच्चा) माबूद नहीं.

*** इक़ामत ***				
أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰـــهَ إِلَّا اللهُ ۝			اَللهُ أَكْبَرُ اَللهُ أَكْبَرُ ۝	
मैं गवाही देता हूं कि कोई माबूद नहीं है सिवाए अल्लाह के			अल्लाह सब से बड़ा है । अल्लाह सब से बड़ा है ।	
حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ ۝		أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُولُ اللهِ ۝		
नमाज़ की ।	आओ तरफ़	मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) अल्लाह के रसूल हैं ।		
قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوةُ ۝	قَامَتِ الصَّلٰوةُ ۝	قَدْ	حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ ۝	
तहक़ीक़ (यक़ीनन) खड़ी हो गई नमाज़	खड़ी हो गई नमाज़	तहक़ीक़ (यक़ीनन)	कामयाबी की	आओ तरफ़
لَا إِلٰـــهَ إِلَّا اللهُ			اَللهُ أَكْبَرُ اَللهُ أَكْبَرُ ۝	
नहीं है कोई माबूद सिवाए अल्लाह के			अल्लाह सब से बड़ा है । अल्लाह सब से बड़ा है ।	
***** सना *****				
اِسْمُكَ	وَتَبَارَكَ	وَبِحَمْدِكَ	اَللّٰهُمَّ	سُبْحَانَكَ
तेरा नाम	और बरकत वाला है	और तारीफ़ है तेरे लिए	ऐ अल्लाह	पाक है तू
غَيْرُكَ	وَلَا إِلٰـــهَ	وَتَعَالٰى جَدُّكَ		
सिवाऐ तेरे	और नहीं कोई माबूद	और बुलंद व बाला है तेरी बुज़ुर्गी		

<u>ग्रामर:</u> فَعَلَ 108 के उन 21 सेग़ों की प्रेक्टिस कीजिये जो नीचे दिये गये हैं । आख़री दो सेग़े वाहिद मुअन्नस यानी एक औरत के लिये हैं । उन में दो असमा (फ़ाइल और मफ़ऊल) और मसदर यानी काम का नाम (फ़ेल) भी दिया गया है । तफ़सीली टेबल इस किताब के आख़िर (Appendix) में दिया गया है । उस टेबल में कई सेग़े दिये गये हैं मगर वह बाद मे सीखने के लिये है । 108 का अदद यह बताता है कि क़ुरआन मजीद में यह फ़ेल अपनी मुखतलिफ़ सूरतों में 108 बार आया है ।

मुअन्नस (औरत) के सेग़ों के लिये इशारे के तौर पर बाएँ हाथ का इस्तमाल कीजिये । याद रखिये कि दाएँ हाथ का इस्तमाल हम ने मुज़क्कर (मर्द) के इशारों के लिये किया था । मक़सद सिर्फ़ सिखाना है न कि मुअन्नस के साथ कोई इमतियाज़ी सलूक । यह भी याद रहे कि क़ुरआन में वाहिद मुअन्नस का सेग़ा दूसरे मुअन्नस के सेगों के मुक़ाबले में ज़्यादा इसतेमाल हुआ है ।

فَعَلَ، فَعَلُوا، فَعَلْتَ، فَعَلْتُمْ، فَعَلْتُ، فَعَلْنَا

يَفْعَلُ، يَفْعَلُونَ، تَفْعَلُ، تَفْعَلُونَ، أَفْعَلُ، نَفْعَلُ

اِفْعَلْ، اِفْعَلُوا، لَا تَفْعَلْ، لَا تَفْعَلُوا

فَاعِل، مَفْعُول، فِعْل

(वह करती है تَفْعَلُ ، उस औरन ने किया فَعَلَتْ ، उसका रब رَبُّهَا ، वह هِيَ)

नुकता शौक़ या नुकता खौफ़ और तालीमी नुकता (जगह न हो तो इस सफ़्हे के पीछे नोट कीजिये) :

सबक़ – 13 रुकू, सजूद व तशहहुद (नमाज़ के अज़कार)

***** रुकू के अज़कार / raising up *****				
سُبْحَانَ	رَبِّيَ	الْعَظِيم ۞		
पाक है	मेरा रब	अज़मत वाला	.	.
سَمِعَ اللهُ	لِمَنْ	حَمِدَه ۞	رَبَّنَا	وَلَكَ	الْحَمْدُ
सुन ली अल्लाह ने	जिसने	तारीफ़ की उसकी	ऐ हमारे रब	तेरे ही लिए	हर तरह की तारीफ़ है
***** सजदा के अज़कार (Prostration) *****					
سُبْحَانَ	رَبِّيَ	الْأَعْلَى ۞			
पाक है	मेरा रब	सबसे बुलंद			
***** तशहहुद *****					
اَلتَّحِيَّاتُ	لله	وَالصَّلَوَاتُ	وَالطَّيِّبَاتُ		
सभी क़ौली (ज़ुबान की), बदनी और माली इबादतें	अल्लाह ही के लिए हैं,	और सभी बदनी इबादतें	और सभी माली इबादतें		
اَلسَّلَامُ	عَلَيْكَ	أَيُّهَاالنَّبِيُّ	وَرَحْمَتُ اللهِ	وَبَرَكَاتُه	
सलाम हो	आप पर	ऐ नबी	और अल्लाह की रहमत	और बरकतें हों उसकी	
اَلسَّلَامُ	عَلَيْنَا	وَعَلَى	عِبَادِ اللهِ	الصَّالِحِينَ	
सलाम हो	हम पर	और ऊपर	अल्लाह के बंदों	नेक	
أَشْهَدُ أَنْ	لاَّ إِلَـــهَ	إِلاَّ اللهُ			
मैं गवाही देता हूँ कि	नहीं कोई माबूद	सिवाए अल्लाह के			
وَأَشْهَدُ أَنَّ	مُحَمَّدًا	عَبْدُه	وَرَسُولُه		
और मैं गवाही देता हूँ कि	मुहम्मद (स.)	उसके बंदे	और उसके रसूल (हैं)		

मेरा रब पाक है अज़मत वाला है।

सुन ली अल्लाह ने जिसने उसकी तारीफ़ की।

ऐ हमारे रब तेरे ही लिए हर तरह की तारीफ़ है।

मेरा रब पाक है जो सब से बुलंद है।

सभी क़ौली (ज़ुबान की), बदनी और माली इबादतें अल्लाह ही के लिए हैं,

सलाम हो आप पर ऐ नबी और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें हों

सलाम हो हम पर और अल्लाह के नेक बंदों पर।

मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई (हक़ीक़ी) माबूद नहीं

और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके बंदे और उसके रसूल है।

ग्रामर: فَتَحَ 29 (1a) के नीचे दिये गये 21 अहेम (मूख्य) सेगों की प्रेक्टिस कीजिये। आख़री दो सीग़े वाहिद मुअन्नस के हैं। 29 का अदद यह बताने के लिये है कि क़ुरआन मजीद में यह फ़ेल अपनी मुखतलिफ़ (विभिन्न) सूरतों में 29 बार आया है। 1a फ़ेल की क़िसम (بابِ فَتَحَ) को बताता है। (فَتَحَ : उस ने खोला ; جَعَلَ : उस ने बनाया)

فَتَحَ، فَتَحُوا، فَتَحَتَ، فَتَحْتُمْ، فَتَحْتُ، فَتَحْنَا، يَفْتَحُ، يَفْتَحُونَ، تَفْتَحُ، تَفْتَحُونَ، أَفْتَحُ، نَفْتَحُ

إِفْتَحْ، إِفْتَحُوا، لاَ تَفْتَحْ، لاَ تَفْتَحُوا فَاتِح، مَفْتُوح، فَتْح (هِيَ فَتَحَتْ، تَفْتَحُ)

جَعَلَ، جَعَلُوا، جَعَلتَ، جَعَلْتُمْ، جَعَلْتُ، جَعَلْنَا، يَجْعَلُ، يَجْعَلُونَ، تَجْعَلُ، تَجْعَلُونَ، أَجْعَلُ، نَجْعَلُ

إِجْعَلْ، إِجْعَلُوا، لاَ تَجْعَلْ، لاَ تَجْعَلُوا جَاعِل، مَجْعُول، جَعْل (هِيَ جَعَلَتْ، تَجْعَلُ)

नुकता शौक़ या नुकता खौफ़ और तालीमी नुकता (जगह न हो तो इस सफ़ेह के पीछे नोट कीजिये) :

सबक़ – 14 दरूद (नमाज़ के अज़कार)

***** दरूद (Sending prayers on the Prophet, pbuh) *****				
اَللّٰهُمَّ	صَلِّ	عَلٰى مُحَمَّدٍ	وَعَلٰى اٰلِ	مُحَمَّدٍ
ऐ अल्लाह	दरूद (रहमत) भेज	मुहम्मद (स.) पर	और आल पर	मुहम्मद (स.) की,
كَمَا صَلَّيْتَ	عَلٰى إِبْرَاهِيمَ	وَعَلٰى اٰلِ	إِبْرَاهِيمَ	
जैसे भेजी रहमत तू ने	इब्राहीम पर	और आल पर	इब्राहीम की,	
إِنَّكَ	حَمِيدٌ	مَّجِيدٌ		
बेशक तू है	तारीफ़ के क़ाबिल	बुज़ुर्गी वाला है।		
اَللّٰهُمَّ	بَارِكْ	عَلٰى مُحَمَّدٍ	وَعَلٰى اٰلِ	مُحَمَّدٍ
ऐ अल्लाह	बरकत अता फ़रमा	मुहम्मद (स.) पर	और आल पर	मुहम्मद (स.) की,
كَمَا	بَارَكْتَ	عَلٰى إِبْرَاهِيمَ	وَعَلٰى اٰلِ	إِبْرَاهِيمَ
जैसे	तू ने बरकत अता की	इब्राहीम पर	और आल पर	इब्राहीम की,
إِنَّكَ	حَمِيدٌ	مَّجِيدٌ		
बेशक तू	तारीफ़ के क़ाबिल	बुज़ुर्गी वाला है।		

ऐ अल्लाह मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर और मुहम्मद (स.) की आल पर दरूद (रहमत) भेज

जैसे तूने इब्राहीम अलैहिस्सलाम पर और इब्राहीम (अ.) की आल पर रहमत भेजी.

बेशक तू तारीफ़ के क़ाबिल है बुज़ुर्गी वाला है।

ऐ अल्लाह मुहम्मद (स.) और मुहम्मद (स.) की आल पर बरकत अता फ़रमा जैसे तूने इब्राहीम (अ.) पर और इब्राहीम (अ.) की आल पर बरकत अता की.

बेशक तू तारीफ़ के क़ाबिल बुज़ुर्गी वाला है।

ग्रामर: **نَصَرَ** [92] (1b) के नीचे दिये गये 21 अहेम सेग़ों की प्रेक्टिस कीजिये। आख़री दो सेग़े वाहिद मुअन्नस के हैं। 92 का अदद यह बताने के लिये है कि कुरआन मजीद में यह फ़ेल अपनी मुखतलिफ़ सूरतों में 92 बार आया है। 1b फ़ेल की क़िसम (**باب نَصَرَ**) को बताता है। इस से पहले आपने فَتَحَ، يَفْتَحُ، اِفْتَحْ (यानी باب فَتَحَ 1a) के अफ़आल सीखे। यह बाब **نَصَرَ** (1b) है। बुनियादी गरदान वही **فَعَلَ** की है, फ़र्क सिर्फ़ जेर ज़बर पेश का है। यहाँ **نَصَرَ، يَنْصُرُ، انْصُرْ** के बजाये **نَصَرَ، يَنْصُرُ، اُنْصُرْ** है, यानी **ص** पर ज़बर के बजाये पेश है। अरबी अफ़आल ज़्यादा तर इसी वज़न पर आते हैं। (**نَصَرَ** : उसने मदद की, **خَلَقَ** : उसने पैदा किया)।

نَصَرَ، نَصَرُوا، نَصَرَتْ، نَصَرْتُمْ، نَصَرْتُ، نَصَرْنَا ، يَنْصُرُ، يَنْصُرُونَ، تَنْصُرُ، تَنْصُرُونَ، أَنْصُرُ، نَنْصُرُ

اُنْصُرْ، اُنْصُرُوا، لاَ تَنْصُرْ، لاَ تَنْصُرُوا، نَاصِر، مَنْصُور، نَصْر، (نَصَرَتْ، تَنْصُرُ)

خَلَقَ [248] (1a) के नीचे दिये गये 21 अहेम सेग़ों की प्रेक्टिस कीजिये। आख़री दो सेग़े वाहिद मुअन्नस के हैं।

خَلَقَ، خَلَقُوا، خَلَقْتَ، خَلَقْتُمْ، خَلَقْتُ، خَلَقْنَا ،يَخْلُقُ، يَخْلُقُونَ، تَخْلُقُ، تَخْلُقُونَ، أَخْلُقُ، نَخْلُقُ

اُخْلُقْ، اُخْلُقُوا، لاَ تَخْلُقْ، لاَ تَخْلُقُوا، خَالِق، مَخْلُوق، خَلْق، (خَلَقَتْ، تَخْلُقُ)

नुकता शौक़ या नुकता खौफ़ और तालीमी नुकता (जगह न हो तो इस सफ़ेह के पीछे नोट कीजिये) :

सबक़ – 15 दरूद के बाद (नमाज़ के अज़कार)

ऐ अल्लाह बेशक मैंने अपनी जान पर बहुत ज़्यादा ज़ुल्म किया है और तेरे सिवा (कोई भी) गुनाहों को नहीं बख़्श सकता, बस मुझको बख़्श दे अपनी ख़ास बख़िशश से और मुझ पर रहम फ़रमा। बेशक तू ही बख़्शने वाला बेहद रहम वाला है।

***** दरूद के बाद की दुआ / before the Ending Salam *****				
اَللّٰهُمَّ	إِنِّي	ظَلَمْتُ	نَفْسِي	ظُلْمًا كَثِيرًا
ऐ अल्लाह	बेशक मैं	(मैं ने) ज़ुल्म किया	अपनी जान पर	ज़ुल्म बहुत ज़्यादा
وَّلاَ	يَغْفِرُ	الذُّنُوبَ	إِلاَّ أَنْتَ	فَاغْفِرْ لِي
और नहीं	बख़्श सक्ता	गुनाहों को	सिवाए तेरे	बस बख़्श दे मुझ को
مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ		وَارْحَمْنِي		
अपनी ख़ास बख़िशश से		और मुझ पर रहेम फ़रमा		
إِنَّكَ أَنْتَ	الْغَفُورُ	الرَّحِيمُ		
बेशक तू ही	बख़्शने वाला	बेहद रहम वाला है		

ग्रामर: **ذَكَرَ** 163 (1b) के नीचे दिये गये 21 अहेम सेगों की प्रेक्टिस कीजिये। (**ذَكَرَ** : उस ने याद किया)

ذَكَرَ، ذَكَرُوا، ذَكَرَتَ، ذَكَرْتُمْ، ذَكَرْتُ، ذَكَرْنَا، يَذْكُرُ، يَذْكُرُونَ، تَذْكُرُ، تَذْكُرُونَ، أَذْكُرُ، نَذْكُرُ
اُذْكُرْ، اُذْكُرُوا، لاَ تَذْكُرْ، لاَ تَذْكُرُوا، ذَاكِر، مَذْكُور، ذِكْر، (ذَكَرَتْ، تَذْكُرُ)

كَفَرَ461 (1b) के नीचे दिये गये 21 अहेम सेगों की प्रेक्टिस कीजिये। (**كَفَرَ** : उसने इनकार किया, ना शुकरी की)।

كَفَرَ، كَفَرُوا، كَفَرَتَ، كَفَرْتُمْ، كَفَرْتُ، كَفَرْنَا، يَكْفُرُ، يَكْفُرُونَ، تَكْفُرُ، تَكْفُرُونَ، أَكْفُرُ، نَكْفُرُ
اُكْفُرْ، اُكْفُرُوا، لاَ تَكْفُرْ، لاَ تَكْفُرُوا، كَافِر، مَكْفُور، كُفْر، (كَفَرَتْ، تَكْفُرُ)

नुक्ता शौक़ या नुक्ता खौफ़ और तालीमी नुक्ता (जगह न हो तो इस सफ़ेह के पीछे नोट कीजिये) :

सबक़ – 16 दुआएँ

ऐ अल्लाह मैं तेरे ही नाम से मरता और जीता हूं ।

===============

हर क़िस्म की तारफ़ि और शुक्र अल्लाह ही के लिए है जिसने हमको ज़िंदा किया, हमको मौत देने के बाद, और उसी की तरफ़ उठ कर जाना है ।

* अल्लाह के नाम से

* अल्लाह के नाम से इसके शुरू में और इसके आख़िर में ।

* सब तारीफ़ और शुक्र अल्लाह के लिए है जिसने हमें खिलाया और पिलाया. और मुसल्मान (यानी बात को सुन्ने वाला) बनाया ।

<table>
<tr><td colspan="20">***** सोने के वक़्त की दुआ *****</td></tr>
<tr><td colspan="5">وَأَحْيَا</td><td colspan="5">أَمُوتُ</td><td colspan="5">بِاسْمِكَ</td><td colspan="5">اَللّٰهُمَّ</td></tr>
<tr><td colspan="5">और मैं जीता हूं ।</td><td colspan="5">मैं मरता हूँ</td><td colspan="5">तेरे नाम से</td><td colspan="5">ऐ अल्लाह</td></tr>
<tr><td colspan="20">***** नींद से जागने पर *****</td></tr>
<tr><td colspan="5">أَحْيَانَا</td><td colspan="5">الَّذِي</td><td colspan="5">لِلّٰهِ</td><td colspan="5">اَلْحَمْدُ</td></tr>
<tr><td colspan="5">ज़िंदा किया हमको</td><td colspan="5">जिसने</td><td colspan="5">अल्लाह के लिए</td><td colspan="5">तारीफ़ और शुक्र</td></tr>
<tr><td colspan="5">النُّشُورُ</td><td colspan="5">وَإِلَيْهِ</td><td colspan="5">أَمَاتَنَا</td><td colspan="5">بَعْدَ مَا</td></tr>
<tr><td colspan="5">उठ कर जाना है ।</td><td colspan="5">और उसी की तरफ़</td><td colspan="5">मौत देने के हमको</td><td colspan="5">बाद</td></tr>
<tr><td colspan="20">***** खाना शुरू करते वक़्त *****</td></tr>
<tr><td colspan="4">وَآخِرِهِ</td><td colspan="4">فِي أَوَّلِهِ</td><td colspan="4">بِسْمِ اللهِ</td><td colspan="4" rowspan="2">या अगर शुरू में कहना भूल जाए तो कहे</td><td colspan="4" rowspan="2">بِسْمِ اللهِ</td></tr>
<tr><td colspan="4">और इसके आख़िर में</td><td colspan="4">इसके शुरू में</td><td colspan="4">अल्लाह के नाम से</td></tr>
<tr><td colspan="20">***** खाना खाने के बाद *****</td></tr>
<tr><td colspan="4">وَسَقَانَا</td><td colspan="4">أَطْعَمَنَا</td><td colspan="4">الَّذِي</td><td colspan="4">لِلّٰهِ</td><td colspan="4">اَلْحَمْدُ</td></tr>
<tr><td colspan="4">और पिलाया हमें</td><td colspan="4">खिलाया हमें</td><td colspan="4">जिस ने</td><td colspan="4">अल्लाह के लिए है</td><td colspan="4">तारीफ़ व शुक्र</td></tr>
<tr><td colspan="12">مِنَ الْمُسْلِمِينَ</td><td colspan="8">وَجَعَلَنَا</td></tr>
<tr><td colspan="12">इस्लाम लाने वालों (में) से</td><td colspan="8">और बनाया हमें</td></tr>
</table>

ग्रामर: رَزَقَ[122] (1b), دَخَلَ[78] (1b), and عَبَدَ[143] (1b) के नीचे दिये गये 21 अहेम सेगों की प्रेक्टिस कीजिये ।

(رَزَقَ : उसने रिज़्क़ दिया, دَخَلَ : वह दाखि़ल हुआ, عَبَدَ : उसने इबादत की)

رَزَقَ، رَزَقُوا، رَزَقْتَ، رَزَقْتُم، رَزَقْتُ، رَزَقْنَا ،يَرْزُقُ, يَرْزُقُونَ, تَرْزُقُ, تَرْزُقُونَ, أَرْزُقُ، نَرْزُقُ

اُرْزُقْ، اُرْزُقُوا، لاَ تَرْزُقْ، لاَ تَرْزُقُوا، رَازِق، مَرْزُوق، رِزْق، (رَزَقْتُ، تَرْزُقُ)

دَخَلَ، دَخَلُوا، دَخَلْتَ، دَخَلْتُم، دَخَلْتُ، دَخَلْنَا ،يَدْخُلُ, يَدْخُلُونَ, تَدْخُلُ, تَدْخُلُونَ, أَدْخُلُ، نَدْخُلُ

اُدْخُلْ، اُدْخُلُوا، لاَ تَدْخُلْ، لاَ تَدْخُلُوا، دَاخِل، مَدْخُول، دُخُول، (دَخَلْتُ، تَدْخُلُ)

عَبَدَ، عَبَدُوا، عَبَدْتَّ، عَبَدْتُّم، عَبَدْتُّ، عَبَدْنَا ، يَعْبُدُ, يَعْبُدُونَ, تَعْبُدُ, تَعْبُدُونَ, أَعْبُدُ، نَعْبُدُ

اُعْبُدْ، اُعْبُدُوا، لاَ تَعْبُدْ، لاَ تَعْبُدُوا، عَابِد، مَعْبُود، عِبَادَة، (عَبَدْتُ، تَعْبُدُ)

नुकता शौक़ या नुकता खौफ़ और तालीमी नुकता (जगह न हो तो इस सफ़ेह के पीछे नोट कीजिये) :

सबक़ – 17 इआदा

अब तक जो कुछ पढ़ा है उसका इआदा कीजिये ।

ग्रामर: (नया सबक़)

ضَرَبَ[58] (1c); **ظَلَمَ**[266] (1c); and **غَفَرَ**[95] (1c) के नीचे दिये गये 21 अहेम सेगों की प्रेक्टिस कीजिये । आख़री दो सेग़े वाहिद मुअन्नस के हैं । बुनियादी गरदान वही **فَعَلَ** की है, फ़र्क सिर्फ़ ज़ेर ज़बर पेश का है । मसलन यहा *ضَرَبَ، يَضْرَبُ، اِضْرَبْ* के बजाये *ظَلَمَ، يَظْلِمُ، اِظْلِمُوا* है, और *ضَرَبَ، يَضْرِبُ، اِضْرِبْ،* के बजाये *ظَلَمَ، يَظْلَمُ ، اِظْلَمُوا* है,

(**ضَرَبَ** : उसने मारा; **ضَرَبَ مَثَلاً** : उसने मिसाल दी; **ظَلَمَ** : उसने ज़ुल्म किया; **غَفَرَ** उसने बख़्शिश की)

ضَرَبَ، ضَرَبُوا، ضَرَبْتَ، ضَرَبْتُمْ، ضَرَبْتُ، ضَرَبْنَا **، يَضْرِبُ, يَضْرِبُونَ, تَضْرِبُ, تَضْرِبُونَ, أَضْرِبُ، نَضْرِبُ**
اِضْرِبْ، اِضْرِبُوا، لاَ تَضْرِبْ، لاَ تَضْرِبُوا، ضَارِب، مَضْرُوب، ضَرْب، (*ضَرَبَتْ، تَضْرِبُ*)

ظَلَمَ، ظَلَمُوا، ظَلَمْتَ، ظَلَمْتُمْ، ظَلَمْتُ، ظَلَمْنَا **، يَظْلِمُ, يَظْلِمُونَ, تَظْلِمُ, تَظْلِمُونَ, أَظْلِمُ، نَظْلِمُ**
اِظْلِمْ، اِظْلِمُوا، لاَ تَظْلِمْ، لاَ تَظْلِمُوا، ظَالِم، مَظْلُوم، ظُلْم، (*ظَلَمَتْ، تَظْلِمُ*)

غَفَرَ، غَفَرُوا، غَفَرْتَ، غَفَرْتُمْ، غَفَرْتُ، غَفَرْنَا **، يَغْفِرُ, يَغْفِرُونَ, تَغْفِرُ, تَغْفِرُونَ, أَغْفِرُ، نَغْفِرُ**
اِغْفِرْ، اِغْفِرُوا، لاَ تَغْفِرْ، لاَ تَغْفِرُوا، غَافِر، مَغْفُور، مَغْفِرَة، (*غَفَرَتْ، تَغْفِرُ*)

नुक्ता शौक़ या नुक्ता खौफ़ और तालीमी नुक्ता (जगह न हो तो इस सफ़ेह के पीछे नोट कीजिये) :

सबक़ – 18 क़ुरआनी दुआएँ

***** क़ुरआनी दुआएँ *****				
رَبِّ	زِدْنِي	عِلْمًا (20:114)		
ऐ मेरे रब	ज़्यादा कर मुझे	इल्म में		
رَبَّنَآ	آتِنَا	فِي الدُّنْيَا	حَسَنَةً	وَّفِي الآخِرَةِ
ऐ हमारे रब!	हमें दे	दुनिया में	भलाई	और आख़िरत में
حَسَنَةً	وَّقِنَا	عَذَابَ	النَّارِ (2:201)	
भलाई	और हमें बचा	अज़ाब	आग (दोज़ख़)	

* ऐ मेरे रब मुझे और ज़्यादा इल्म दे ।

---

* ऐ हमारे रब! हमें दे दुनिया में भलाई और आख़िरत में भलाई, और हमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा ले ।

ग्रामर: سَمِعَ[100] (1d); عَلِمَ[518] (1d); and عَمِلَ[318] (1d) के नीचे दिये गये 21 अहेम सेगों की प्रेक्टिस कीजिये । बुनियादी गरदान वही فَعَلَ की है, फ़र्क सिर्फ़ ज़ेर ज़बर पेश का है । मसलन यहाँ سَمَعَ ، يَسْمَعُ ، اِسْمَعْ के बजाये سَمِعَ ، يَسْمَعُ ، اِسْمَعْ, है, इसी तरह عَلِمَ، يَعْلَمُ، اِعْلَمْ और عَمِلَ، يَعْمَلُ،اِعْمَلْ आते है,

(سَمِعَ[100] : उसने सुना; عَلِمَ : उसने जाना; عَمِلَ : उसने अमल किया)

سَمِعَ، سَمِعُوا، سَمِعْتَ، سَمِعْتُمْ، سَمِعْتُ، سَمِعْنَا ، يَسْمَعُ، يَسْمَعُونَ، تَسْمَعُ، تَسْمَعُونَ، أَسْمَعُ، نَسْمَعُ

اِسْمَعْ، اِسْمَعُوا، لاَ تَسْمَعْ، لاَ تَسْمَعُوا، سَامِع، مَسْمُوع، سَمْع، (سَمِعْتُ، تَسْمَعُ)

عَلِمَ، عَلِمُوا، عَلِمْتَ، عَلِمْتُمْ، عَلِمْتُ، عَلِمْنَا ، يَعْلَمُ، يَعْلَمُونَ، تَعْلَمُ، تَعْلَمُونَ، أَعْلَمُ، نَعْلَمُ

اِعْلَمْ، اِعْلَمُوا، لاَ تَعْلَمْ، لاَ تَعْلَمُوا، عَالِم، مَعْلُوم، عِلْم، (عَلِمْتُ، تَعْلَمُ)

عَمِلَ، عَمِلُوا، عَمِلْتَ، عَمِلْتُمْ، عَمِلْتُ، عَمِلْنَا ، يَعْمَلُ، يَعْمَلُونَ، تَعْمَلُ، تَعْمَلُونَ، أَعْمَلُ، نَعْمَلُ

اِعْمَلْ، اِعْمَلُوا، لاَ تَعْمَلْ، لاَ تَعْمَلُوا، عَامِل، مَعْمُول، عَمَل، (عَمِلْتُ، تَعْمَلُ)

नुकता शौक़ या नुकता खौफ़ और तालीमी नुकता (जगह न हो तो इस सफ़ेह के पीछे नोट कीजिये) :

सबक़ – 19 मुतफ़र्रिक़ात

لِّلْعَالَمِينَ	رَحْمَةً	إِلاَّ	وَمَا أَرْسَلْنَاكَ
जहानों के लिये	रहमत बना कर	मगर	और नहीं हम ने भेजा आपको

ثُمَّ يُحْيِيكُمْ	ثُمَّ يُمِيتُكُمْ	ثُمَّ رَزَقَكُمْ	خَلَقَكُمْ	اللهُ الَّذِي
फिर ज़िन्दगी देगा तुमको	फिर मौत देगा तुमको	फिर रिज़्क़ दिया तुम को	पैदा किया तुमको	अल्लाह है जिसने

	الصَّابِرِين.	مَعَ	اللهَ	إِنَّ
.	सब्र करने वालों के	साथ (है)	अल्लाह	बेशक

رَاجِعُونَ.	إِلَيْه	وَإِنَّا	إِنَّا لله
लौट कर जाने वाले हैं।	उसी की तरफ़	और बेशक हम	बेशक हम अल्लाह के लिए

		حَكِيمٌ	عَلِيمٌ	وَاللهُ
.	.	हिक्मत वाला है	जान्ने वाला	और अल्लाह

فِي الْأَرْضِ	وَمَا	فِي السَّمَاوَاتِ	مَا	يُسَبِّحُ لله
ज़मीन में है।	और जो (कुछ)	आसमानों में	जो (कुछ)	तसबीह करता है अल्लाह के लिये

غَيْرُه	مِّن إله	لَكُمْ	مَا	اعْبُدُوا اللهَ	يقَوْمِ
सिवा उसके	कोई माबूद	तुमहारे लिये	नहीं है	इबादत करो अल्लाह की	ऐ मेरी क़ौम

فِي سَبِيلِ اللّه	وَأَنفسكُمْ	بِأَمْوَالِكُمْ	وَجَاهِدُوا
अल्लाह के रास्ते में	और तुम्हारी जानों से	तम्हारे मालों से	और जिहाद करो

ग्रामर:

قالَ **1719** (1i) के नीचे दिये गये 21 अहेम सेगों की प्रेक्टिस कीजिये। **قالَ : उसने कहा**

قَالَ، قَالُوا، قُلْتَ، قُلْتُمْ، قُلْتُ، قُلْنَا، يَقُولُ، يَقُولُونَ، تَقُولُ، تَقُولُونَ، أَقُولُ، نَقُولُ

قُلْ، قُولُوا، لاَ تَقُلْ، لاَ تَقُولُوا، قَائِل، مَقُول، قَوْل، (قَالَتْ، تَقُولُ)

كَانَ **1361** (1i) के नीचे दिये गये 21 अहेम सेगों की प्रेक्टिस कीजिये। **كَانَ** : वह था; **يَكُونُ** : वह है या होगा ; **كُنْ** : हो जा!

كَانَ، كَانُوا، كُنتَ، كُنتُمْ، كُنتُ، كُنَّا، يَكُونُ، يَكُونُونَ، تَكُونُ، تَكُونُونَ، أَكُونُ، نَكُونُ

كُنْ، كُونُوا، لاَ تكُنْ، لاَ تَكُونُوا، كَائِن، -، كَوْن (كَانَتْ، تَكُونُ)

नुकता शौक़ या नुकता खौफ़ और तालीमी नुकता (जगह न हो तो इस सफ़ेह के पीछे नोट कीजिये) :

सबक़ – 20 मुतफ़र्रिक़ात

أَيُّكُمْ	أَحْسَنُ	عَمَلاً			
कौन तुम में से	बेहतर (होगा)	अ़मल में			
هٰذَا	مِنْ فَضْلِ	رَبِّي			
यह	फ़ज़्ल से (है)	मेरे रब के।			
إِنَّمَا الْأَعْمَالُ	باالنِّيَّات.	لَوْ	تَفْتَحُ	عَمَلُ الشَّيْطَان	
आमाल तो बस	निय्यतों पर हैं।	अगर (की बात)	खोलती है	शैतान के अमल का दरवाज़ा।	
الصَّلَاةُ	خَيْرٌ	مِّنَ النَّوْم			
नमाज़	बेहतर है	नीन्द से।			
مَن رَّبُّكَ	مَا دِينُكَ؟	كَيْفَ الْحَال؟			
कौन है तेरा रब?	क्या है तेरा दीन?	क्या हाल हैं?			
كَمْ	فُلُوس	عِندَكَ؟			
कितने	पैसे हैं	आप के पास?			
مَلَكُ الْمَوْت	كَمْ هٰذَا؟				
फ़रिश्ता मौत का	कितने में है यह (सामान)?				

ग्रामर: **دَعَا** [197] (1j), **شَاءَ** [277] (1j) और **جَاءَ** [236] (1j) के नीचे दिये गये 21 अहेम सेगों की प्रेक्टिस कीजिये।

(**دَعَا** : उसने पुकारा), (**شَاءَ** : उसने चाहा) (**جَاءَ** : वह आया)

دَعَا، دَعَوْا، دَعَوْتَ، دَعَوْتُمْ، دَعَوْتُ، دَعَوْنَا، يَدْعُو، يَدْعُونَ، تَدْعُو، تَدْعُونَ، أَدْعُو، نَدْعُو

اُدْعُ، اُدْعُوا، لاَ تَدْعُ، لاَ تَدْعُوا، دَاعٍ، مَدْعُوٌّ، دُعَاء، (دَعَتْ، تَدْعُو)

شَاءَ، شَاءُوا، شِئْتَ، شِئْتُمْ، شِئْتُ، شِئْنَا، يَشَاءُ، يَشَاءُونَ، تَشَاءُ، تَشَاءُونَ، أَشَاءُ، نَشَاءُ

----، (شَاءَتْ، تَشَاءُ)

جَاءَ، جَاءُوا، جِئْتَ، جِئْتُمْ، جِئْتُ، جِئْنَا، ---

---، (جَاءَتْ، –)

नुकता शौक़ या नुकता खौफ़ और तालीमी नुकता (जगह न हो तो इस सफ़ेह के पीछे नोट कीजिये) :

सबक़ – 21 इआदा

अब तक जो कुछ पढ़ा है उसका इआदा कीजिये ।

<u>ग्रामर:</u> (नया सबक़)

ये छः अलफ़ाज़ क़ुरआन पाक में **2286** बार आये हैं । هٰذَا، هٰٓؤُلَآءِ، ذٰلِكَ، أُولٰئِكَ، الَّذِي، الَّذِينَ.

इन 6 अलफ़ाज़ को समझते हुये TPI के ज़रिये इस तरह प्रेक्टिस कीजिये । هذا केहते वक़्त एक उँगली से और هؤلاء केहते वक़्त चारों उँगलियों से नीचे किताबों की तरफ़ इशारा कीजिये । ذلك; أولئك केहते वक़्त एक उँगली और चारों उँगलियों से (न दाएँ तरफ़ की तरफ़ जो कि هُوَ، هُمْ का है और न सामने की तरफ़ जो कि أَنْتَ، أَنْتُمْ का है बल्कि दौनों के बीच में) इशारा कीजिये । الَّذِي; الَّذِينَ केहते वक़्त एक उँगली और चारों उँगलियों से उसी रुख़ पर जो ذلك; أولئك का है ज़रा हाथ ऊपर की तरफ़ दूर की तरफ़ इशारा कीजिये, गोया आप किसी के बारे में (वह जो) याद दिला रहे हों । 5 मिनट की यह प्रेक्टिस आपको 2286 बार आने वाले अलफ़ाज़ को अच्छी तरह याद करवा देगी ।

Demonstrative and Relative Pronouns	
येह	هٰذَا
येह सब	هٰٓؤُلَآءِ
वह	ذٰلِكَ
वह सब	أُولٰٓـئِكَ
वह जो	اَلَّذِي
वह सब जो	اَلَّذِينَ

नुकता शौक़ या नुकता खौफ़ और तालीमी नुकता (जगह न हो तो इस सफ़्हे के पीछे नोट कीजिये) :

सबक़ – 22 और 23: बार बार आने वाले अलफ़ाज़ (शब्द)

तक़रीबन 100 अलफ़ाज़ की लिस्ट जो क़ुरआन करीम में तक़रीबन 40,000 बार आये हैं (कुल तक़रीबन 78000 में से) | अलफ़ाज़ के मानी लिखिये और मिसालों को अच्छी तरह याद रखिये। याद रहे कि हम ने इस कोर्स में बुनियादी मानी सीखे हैं और क़ुरआन में यह अलफ़ाज़ अक्सर इन्ही मानों में इस्तेमाल हुये हैं।

لاَ، لاَ!!!			
لاَ إِلٰـــهَ إِلاَّ اللهُ		لاَ	1732
لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ . وَلَمْ يَكُن لَّهُ كُفُوًا أَحَدٌ .		لَمْ (past)	347
مَا لَكُمْ مِّنْ إِلٰهٍ غَيْرُه، وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلاَّ رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ		مَا	2155
غَيْرِ الْمَغضُوبِ عَلَيهِمْ ، وَلاَ إِلٰـــهَ غَيْرُكَ		غَيْر	147
لاَ إِلٰـــهَ إِلاَّ اللهُ		إِلاَّ	666
		إِنْ ... إِلاَّ	
وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلاَّ رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ .		مَا... إِلاَّ	
هٰذَا، هٰؤُلاَءِ، ...			
هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّي		mg هٰذَا	225
mg/fg		هٰؤُلاَءِ	46
		mg ذٰلِكَ	427
mg/fg		أُولٰئِكَ	204
الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ .		mg الَّذِي	304
صِرَاطَ الَّذِينَ أَنعَمتَ عَلَيهِمْ		mg الَّذِينَ	1080
هُوَ، هُمْ، ...			
قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ .		mg هُوَ	481
		mg هُمْ	444
		mg أَنْتَ	81
وَلاَ أَنتُمْ عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُ .		mg أَنْتُم	135
وَلاَ أَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدتُّمْ .		mg/fg أَنَا	68
		mg/fg نَحْنُ	86
مَا؟، مَنْ؟، كَيفَ؟ ...			
مَا دِيْنُكَ؟ ::		مَا ؟	**
من رَّبُّك؟ ::		مَنْ ؟	823
كَيْفَ الْحَال؟ ::		كَيْفَ ؟	83
كَمْ هذَا؟ :: كَمْ فُلُوس عِندَكَ؟ ::		كَمْ؟	

कब?			
–		إِذْ past	239
إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ .		إِذَا future	454
اَلْحَمْدُ لله الَّذِيْ أَحْيَانَا بَعْدَ مَا أَمَاتَنَا وَإِلَيْهِ النُّشُوْرُ، ::		بَعْد	196
اللهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ		ثُمَّ	338
كَمْ فُلُوس عِندَكَ؟ ::		عِنْدَ	197
حروف جر... **(जो इन छः के साथ आएँ ـه،ـهُمْ،ـكَ،ـكُمْ،ـي، ـنَا،ـهَا)**			
لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ .		لَ ، لِ	1367
اَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ::		مِنْ	3026
رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ::		عَنْ	404
إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ		مَعَ	163
بِسْمِ اللَّهِ		بِ	510
فِي سبيل الله		فِي	1658
السَّلاَمُ عَلَيْكُمْ ::		عَلَىٰ	1423
اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ .		إِلَىٰ	736
لَن تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّىٰ تُنفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ		حَتَّىٰ	142
إِنَّ، أَنَّ، إِنْ، أَن...			
إِنْ شَاءَ الله ::		إِنْ	628
إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ		إِنَّ	1297
أَشْهَدُ أَن لاَّ إِلـــٰـهَ إِلاَّ الله ::		أَنْ	576
أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُولُ الله ::		أَنَّ	263
إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّات ::		إِنَّمَا	146
لَوْ تَفْتَحُ عَمَلُ الشَّيْطَان ::		لَوْ	200
قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ. ،		يَا، يَاأَيُّهَا	150
إِنَّ الْإِنسَانَ لَفِي خُسْرٍ، وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرآنَ لِلذِّكْر		لَ	-
قَدْ قَامَتِ الصَّلَوة ::، وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرآنَ لِلذِّكْر		قَدْ	409

:: का मत्लब यह है कि यह कुरआन का हिस्सा नहीं ।

सिफ़ात Attributes			
82	أَوَّل أُولَىٰ		بِسْمِ اللّهِ فِي أَوَّلِه وَآخِرِه ::
40	آخِر آخِرَة		بِسْمِ اللّهِ فِي أَوَّلِه وَآخِرِه ::
57	رَحْمٰن		بِسْمِ اللّهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ .
970	رَبّ		الْحَمْدُ للّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ .
91	غَفُور		إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ::
162	عَلِيم		وَاللهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ
97	حَكِيم		وَاللهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ
74	كَثِير كَثِيرَة		اَللّهُمَّ انِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ ظُلْمًا كَثِيْرًا ::
182	رَحِيم		بِسْمِ اللّهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ .
निशानियाँ آيات			
70	قُرْآن		وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ
461	أَرْض		يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
310	سَمَاء (سَمَاوات *pl*)		يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
अम्बिया, रुसुल			
332	رَسُول (رُسُل *pl*)		أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُولُ اللهِ ::
75	نَبِيّ (نَبِيُّون، نَبِيِّين، أَنْبِيَاء *pl*)		السَّلاَمُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُه ::
279	آدَم نُوح إِبْرَاهِيم لُوط إِسْمَاعِيل يَعْقُوب (إِسْرَائِيل)		
225	هُود شُعَيْب مُوسَىٰ عِيسَى ابنِ مَرْيَم		
शैतान वग़ैरा			
88	شَيْطَان (شَيَاطِين *pl*)		أَعُوذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيم
74	فِرْعَوْن		
आख़िरत آخرة			
115	الْآخِرَة		رَبَّنَآ آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الآخِرَةِ حَسَنَةً
147	جَنَّة (جَنَّات *pl*) الْجَنَّة		
77	جَهَنَّم		
322	عَذَاب		رَبَّنَآ آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الآخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ .
145	نَار		رَبَّنَآ آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الآخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ .
393	يَوْم (أَيَّام *pl*)		مٰلِكِ يَوْمِ الدِّينِ .

अक़ीदा			
2702	الله (اَللّٰهُمَّ)		قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ
85	أَحَد (إِحْدَىٰ fg)		قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ، وَلَمْ يَكُن لَّه‘ كُفُوًا أَحَدٌ .
34	إِلـــٰـــهَ (آلِهَة pl)		لاَ إِلـــٰـــهَ إِلاَّ الله
261	كِتَاب (كُتُب pl)		–
88	مَلَك(مَلاَئِكَة pl)		مَلَكُ الْمَوْت ::
247	حَقّ		...وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ
43	حَمْد		الْحَمْدُ للّه رَبِّ الْعَالَمِينَ .
92	دِين		مٰلِكِ يَوْمِ الدِّينِ.، لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ .
83	صَلاَة		الصَّلاَةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْم ::
84	فَضْل		هذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّي
31	حَسَنَة (حَسَنَاتpl)		رَبَّنَآ آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الآخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ .
186	خَيْر		اَلصَّلَوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْم ::
इन्सान, लोग, दुनिया			
293	نَفْس (أَنْفُس pl)		اَللّٰهُمَّ انِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ ظُلْمًا كَثِيْرًا ::
126	عَبْد (عِبَاد pl)		اَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُه وَرَسُوْلُه‘ ::
65	انْسَان		إِنَّ الْإِنسَانَ لَفِي خُسْرٍ. إِلاَّ الَّذِينَ ...
248	نَاس		قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ. مَلِكِ النَّاسِ. إِلـــٰـــهَ النَّاسِ.
383	قَوْم		يقَوْمِ اعْبُدُوا اللهَ مَا لَكُمْ مِّن إِلهٍ غَيْرُه
115	دُنْيَا		رَبَّنَآ آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الآخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ
176	سَبِيل (سُبُل pl)		وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ فِي سَبِيلِ اللّهِ
46	صِرَاط		صِرَاطَ الَّذِينَ أَنعَمتَ عَلَيهِمْ
73	عَالَم (عَالَمِين pl)		الْحَمْدُ للّه رَبِّ الْعَالَمِينَ
86	مَال (أَمْوَال pl)		وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ فِي سَبِيلِ اللّهِ

Triliteral Verbs: ثلاثي مجرد								
105	فَعَلَ *	يَفْعَلُ	اِفْعَلْ	فَاعِل	مَفْعُول	فِعْل		
29	فَتَحَ *	يَفْتَحُ	اِفْتَحْ	فَاتِح	مَفْتُوح	فَتْح		إِذَا جَاء نَصْرُ اللَّه وَالْفَتْحُ .
346	جَعَلَ *	يَجْعَلُ	اِجْعَلْ	جَاعِل	مَجْعُول	جَعْل		اَللّهُمَّ اجْعَلْنِيْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ ::
92	نَصَرَ *	يَنْصُرُ	اُنْصُرْ	نَاصِر	مَنْصُور	نَصْر		إِذَا جَاء نَصْرُ اللَّه وَالْفَتْحُ .
248	خَلَقَ	يَخْلُقُ	اُخْلُقْ	خَالِق	مَخْلُوق	خَلْق		مِن شَرِّ مَا خَلَقَ .
461	كَفَرَ *	يَكْفُرُ	اُكْفُرْ	كَافِر	مَكْفُور	كُفْر		قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ، وَنَشْكُرُكَ وَلاَ نَكْفُرُكَ ::
163	ذَكَرَ *	يَذْكُرُ	اُذْكُرْ	ذَاكِر	مَذْكُور	ذِكْر		وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْر
122	رَزَقَ	يَرْزُقُ	اُرْزُقْ	رَازِق	مَرْزُوق	رِزْق		اللهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ
78	دَخَلَ	يَدْخُلُ	اُدْخُل	دَاخِل	مَدْخُول	دُخُول		يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللهِ أَفْوَاجًا .
143	عَبَدَ *	يَعْبُدُ	اُعْبُدْ	عَابِد	مَعْبُود	عِبَادَة		إِيَّاكَ نَعْبُدُ وإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ .
58	ضَرَبَ*	يَضْرِبُ	اِضْرِبْ	ضَارِب	مَضْرُوب	ضَرْب		ضَرَبَ، ضَرَبَ اللهُ مَثَلاً
95	غَفَرَ	يَغْفِرُ	اِغْفِرْ	غَافِر	مَغْفُور	مَغْفِرَة		فَاغْفِرْ لِيْ مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ ::
53	صَبَرَ	يَصْبِرُ	اِصْبِرْ	صَابِر	–	صَبْر		إِنَّ اللهَ مَعَ الصَّابِرِين
266	ظَلَمَ *	يَظْلِمُ	اِظْلِمْ	ظَالِم	مَظْلُوم	ظُلْم		اَللّهُمَّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ ::
100	سَمِعَ *	يَسْمَعُ	اِسْمَعْ	سَامِع	مَسْمُوع	سَمَاعَة		سَمِعَ اَللهُ لِمَنْ حَمِدَه ::
148	رَحِمَ	يَرْحَمُ	اِرْحَمْ	رَاحِم	مَرْحُوم	رَحْمَة		اَللّهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَارْحَمْنِيْ ::
518	عَلِمَ *	يَعْلَمُ	اِعْلَمْ	عَالِم	مَعْلُوم	عِلْم		رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا
318	عَمِلَ *	يَعْمَلُ	اِعْمَلْ	عَامِل	مَعْمُول	عَمَل		أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلاً، إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّات ::
1719	قَالَ *	يَقُولُ	قُلْ	قَائِل	مَقُول	قَوْل		قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ .
55	قَامَ	يَقُومُ	قُمْ	قَائِم	–	قِيَام		قَد قَامَتِ الصَّلَوة ::
1361	كَانَ *	يَكُونُ	كُنْ	كَائِن	مَكُون	كَوْن		
197	دَعَا *	يَدْعُو	اُدْعُ	دَاعٍ	مَدْعُوّ	دُعَاء		–
277	شَاءَ *	يَشَاءُ	شَأْ	شَاءٍ	مَشِيّ	مَشِيئَة		إن شَاءَ الله ::
236	جَاءَ	يَجِيءُ	جِئْ	جَاءٍ	–	مَجِيء		إِذَا جَاء نَصْرُ اللهِ وَالْفَتْحُ .

* का निशान यह बताता है कि इन अफ़आल की तफ़सीली गरदान हमारी दूसरी किताब "क़ुरआन को समझये आसान तरीक़े से" में दी गई है.

सबक़ – 24   इस कोर्स के बाद... एक मिसाल (उदाहरण)

नए अलफ़ाज़ (शब्द) वही हैं जिन के नीचे लाईन दी गयी है | बाकी अलफ़ाज़ को आप ने इस कोर्स में सीख लिया है !!! अल्लाह का शुक्र है कि आप को कुरआने करीम के हर सफ़े पर 50% से ज़्यादा अलफ़ाज़ की पहचान हो गयी है |

255. अल्लाह है उसके सिवा कोई माबूद नहीं, ज़िंदा है, सब को थामने वाला, न उसे ऊंघ आती है और न नींन्द, उसी का है जो आसमानों और ज़मीन में है, कौन है जो सिफ़ारिश करे? उसके पास उसकी इजाज़त के बग़ैर, वह जानता है जो उनके सामने है, और जो उनके पीछे है, और वह नहीं अहाता कर सकते उसके इल्म में से किसी चीज़ का मगर जितना वह चाहे, उसकी कुर्सी समाए हुए है आसमानों और ज़मीन को, इनकी हिफ़ाज़त उसे नहीं थकाती, और वह बुलंद मर्तबा, अज़मत वाला है.

بِسۡمِ اللهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ :सूरह अलबक़र (255) आयतल कुर्सी

اَللّٰهُ	لاَ إِلـٰـــهَ	إِلاَّ هُوَ	اَلْحَيُّ		
अल्लाह	नहीं माबूद	सिवा उसके	ज़िंदा		
اَلْقَيُّومُ	لاَ تَأْخُذُه،	سِنَةٌ	وَلاَ نَوْمٌ		
थामने वाला	न उसे आती है	ऊंघ	और न नींन्द,		
لَه،	مَا فِي	السَّمَاوَاتِ	وَمَا	فِي الْأَرْضِ	
उसी का है	जो	आसमानों में	और जो	ज़मीन में	
مَن	ذَا لَّذِي	يَشْفَعُ	عِندَه،	إِلاَّ	بِإِذْنِه،
कौन	वह जो	सिफ़ारिश करे	उसके पास	मगर (बग़ैर)	उसकी इजाज़त से
يَعْلَمُ	مَا	بَيْنَ أَيْدِيهِمْ	وَمَا	خَلْفَهُمْ	
वह जानता है	जो	उनके सामने	और जो	उनके पीछे है	
وَلاَ يُحِيطُونَ	بِشَيْءٍ	مِّنْ عِلْمِه،	إِلاَّ	بِمَا شَآءَ	
और वह नहीं अहाता करते	किसी चीज़ का	से उसका इल्म	मगर	जितना वह चाहे,	
وَسِعَ كُرْسِيُّهُ	السَّمَاوَاتِ	وَالأَرْضَ	وَلاَ يَئُودُه،		
समालिया उसकी कुर्सी	आसमान	और ज़मीन	और नहीं थकाती उसे		
حِفْظُهُمَا	وَهُوَ	الْعَلِيُّ	الْعَظِيمُ (255)		
इनकी हिफ़ाज़त	और वह	बुलंद मर्तबा	अज़मत वाला		

कुल अलफ़ाज़ : 50, नए अल़फ़ाज़ : 17 (33%), यानि सिर्फ़ 1/3 !!!

अब रुकिये मत 200 घन्टे तक

माशाअल्लाह आप ने यह कोर्स मुकम्मल कर लिया। सच ये है कि आप ने एक खूबसूरत, पुरशौक़, और बहुत ही अहेम तरीन तालीमी सफ़र का आग़ाज़ किया है। अब रुकिये मत! अगर आप यहाँ तक पहुँच चुके हैं तो आगे बढ़िये। इन्शाअल्लाह अब यह सफ़र आसान होता जायेगा। यह शॉर्ट कोर्स हमारी किताब "कुरआन को समझये आसान तरीक़े से" का हिस्सा है। इस किताब के ज़रिये (या कोई और मुनासिब किताब से) आप अपना सफ़र जारी रखिये। "कुरआन को समझये आसान तरीक़े से" की कुछ ख़ास ख़सूसियात यह है।

1. कुरआन को समझने की इब्तेदाई कोशिश उन आयात से कीजिये जिन की आप रोज़ाना तिलावत करते हैं! किसी दूसरी चज़ि को सीखने की ज़रूरत नहीं।

2. अपनी नमाज़ों और दुआओं में इसके फ़ायदों को फ़ौरी महसूस कीजिये।

3. जो आपने सीखा उस की मश्क़ हर रोज़ बार बार अल्लाह से समझ कर बात करते हुए कीजिये, इस से अपनी रग़बत और ताआल्लुक़ को बढ़ाइये।

4. 25 घन्टों का यह कोर्स तक़रीबन 70 फ़ीसद कुरआनी अलफ़ाज़ (अनदाज़न 78,000 में से 55,000) के समझने में मददगार होगा। कोर्स का दौरानिया 50 लेक्चर का है। हर लेक्चर तक़रीबन 25 मिनट का होगा।

5. इन्शाअल्लाह 25 मिनट की रोज़ाना कोशिश अगले दो महीनों में आपकी कुरआन फ़हमी के ख़्वाब को सच करना शुरू कर देगी।

6. हर सबक़ में अरबी बोलचाल का एक अरबी जुमला सीखिये।

7. हर सबक़ में सिर्फ़ 8 से 10 मिनट में फ़ेल (VERB) के तमाम अहेम अबवाब सीखिये।

8. हर सबक़ में अरबी बोलचाल, क़वाइद, और कुरआन शामिल हैं, इस तरह से पढ़ने वालों की दिलचस्पी ज़्यादा देर तक क़ाएम रह सकती है।

9. अगर आप ग्रुप में यह कोर्स कर रहे हों तो इस में हर आदमी लगातार शिरकत कर सकता है बजाये ख़ामोश सुनते रहने के।

10. अरबी ग्रामर का सीखना कभी भी इतना आसान न था। चूँकि इस कोर्स का मक़सद पढ़ने वालों को कुरआन के मौजूदा तराजिम (अनुवादों) के ज़रिये कुरआन को समझने में मदद देना है, इस वजह से इस कोर्स में "نحو" पर कम और "صرف" पर ज़्यादा तवज्जह दी गई है। "صرف" की तालीम के लिये एक निहायत ही सादा टेकनीक (TPI: Total Physical Interaction) का इस्तेमाल किया गया है। TPI के ज़रिये अरबी जुबान के एक मुश्किल सबक़ (فعل की गरदान) को सीखिये। यह वह मरहला है जिस के दौरान लोग सीखने के अमल को छोड़ देते हैं। TPI के इस्तेमाल से इस की सूरत बदल जाती है और यह निहायत ही आसान हो जाता है।

11. ग्रामर सीखने के दौरान (8 से 10 मिनट) आप को दिखाया जायेगा कि आप कुरआन फ़हमी से कितना क़रीब हो गये हैं। इस से आप को बहुत खुशी होगी !

12. कुइज़ों और दो इम्तेहानों के ज़रिये आप अपने आप को जाँच सकते हैं। यह अमल आपको कुरआन फ़हमी के कोर्स को जारी रखने में और ज़्यादा हिम्मत देगा।

13. अरबी जुबान के बाज़ मुश्किल क़वाइद को दिल्चस्प मिसालों और इशारों से याद रखिये।

14. कोर्स के आख़िर में दस असबाक़ में पढ़े गये तमाम अहेम अलफ़ाज़ का इआदा 10 असबाक़ में पेश किया गया है। इन दस असबाक़ में ज़रूरी और बार बार आने वाले अलफ़ाज़ को आसानी से याद रखने के लिये पहले 50 असबाक़ में से ही मिसालें दी गई है।

15. अगर आप को किताब से सीखने में मुश्किल हो रही हो तो आप अकेडमी की तरफ़ से तय्यार कमप्यूटर सीडी हासिल कीजिये। इसमें दिये गये 60 वीडियू असबाक़ को बार बार देख कर इन में माहिर बनये और दूसरों को भी सिखाइये।

16. इस कोर्स का सब से अहेम पहलू यह है कि यह एक तरबियती कोर्स है।इसमें जो आयतें, अज़कार, और दुआएँ ली गई हैं उनको एक मुसलमान बार बार पढ़ता है। अगर वह इसको समझ कर पढ़े तो इन्शाअल्लाह इसका असर उसकी अपनी ज़िन्दगी पर ज़रूर होगा। साथ ही साथ उसको कुरआन फ़हमी की मंज़िल भी क़रीब और आसान लगेगी। इस कोर्स को या इस तरह के कोर्स को हर मुस्लिम घर, मदरसा, मकतब और स्कूल का लाज़मी और अव्वलीन हिस्सा होना चाहिये।

بسم الله

(108) فَعَلَ **He did.** उसने किया

ف ع ل

مَصْدَر (Verbal noun) فِعْل

To do, act (of doing) करना

Attached Pronouns ضمائر متصلہ	Imperfect Tense فِعْل مُضَارِع	Past Tense فِعْل مَاضِي	Detached Pronouns ضمائر منفصلہ
ـهُ	He does or will do. वह करता है वह करेगा يَفْعَلُ	He did. उसने किया فَعَلَ	هُوَ
ـهُمَا	वह दोनों करते हैं या करेंगे يَفْعَلَانِ	उन दोनों ने किया فَعَلَا	هُمَا
ـهُمْ	They do or will do. वह करते हैं वह करेंगे يَفْعَلُونَ	They all did. उन्हों ने किया فَعَلُوا	هُمْ
ـكَ	You do. You will do. आप करते हैं आप करेंगे تَفْعَلُ	You did. आप ने किया فَعَلْتَ	أَنْتَ
ـكُمَا	तुम दोनों करते हैं या करेंगे تَفْعَلَانِ	तुम दोनों ने किया فَعَلْتُمَا	أَنْتُمَا
ـكُمْ	You all do. You all will do. आप सब करते हैं आप सब करेंगे تَفْعَلُونَ	You all did. आप सब ने किया فَعَلْتُمْ	أَنْتُمْ
(with noun) ـي (with verb) ـنِي	I do. I will do. मैं करता हूँ मैं करूंगा أَفْعَلُ	I did. मैं ने किया فَعَلْتُ	أَنَا
ـنَا	We do. We will do. हम करते हैं हम करेंगे نَفْعَلُ	We did. हम ने किया فَعَلْنَا	نَحْنُ
فَعَلَـ اسمـ جَرـ	يَ تَ أَ نَ	ـ وا تَ تُمْ تُ نَا	

Negative نهي		Imperative أمر		
Don't do! मत कर !	لاَ تَفْعَلْ	Do! कर!	اِفْعَلْ	Singular
तुम दोनों मत करो!	لاَ تَفْعَلَا	तुम दोनों करो!	اِفْعَلَا	Dual
Don't (you all) do! मत करो !	لاَ تَفْعَلُوا	Do (you all)! करो !	اِفْعَلُوا	Plural

Passive participle اسم مفعول		Active participle اسم فاعل		
The one who is affected. वह जिस पर असर पड़ा	مَفْعُول	Doer. करने वाला	فَاعِل	Singular
वह दोनों जिन पर असर पढ़ा	مَفْعُولَان، مَفْعُولَين	करने वाले (दो)	فَاعِلَان، فَاعِلَين	Dual
All those who are affected. वह जिन पर असर पड़ा	مَفْعُولُون، مَفْعُولِين	Doers. करने वाले	فَاعِلُون، فَاعِلِين	Plural

مَجْهُول					مَجْهُول
→	It is being done. किया जाता है يُفْعَلُ	(It) is done. किया गया فُعِلَ	هُوَ	←	

यहाँ तरजुमा (अनुवाद) नहीं दिया गया ता कि आप इस टेबल को पिछले से न मिलादें ।

Feminine Gender مُؤَنَّث — ف ع ل — **She did.** उस औरत ने किया **فَعَلَتْ** **(108)**

Attached Pronouns	Imperfect Tense فِعْل مُضَارِع	Past Tense فِعْل مَاضِي	Detached Pronouns
ـهَا	تَفْعَلُ	فَعَلَتْ	هِيَ
ـهُمَا	تَفْعَلاَن	فَعَلَتَا	هُمَا
ـهُنَّ	يَفْعَلْنَ	فَعَلْنَ	هُنَّ
ـكِ	تَفْعَلِيْنَ	فَعَلْتِ	أَنْتِ
ـكُمَا	تَفْعَلاَن	فَعَلْتُمَا	أَنْتُمَا
ـكُنَّ	تَفْعَلْنَ	فَعَلْتُنَّ	أَنْتُنَّ
ـي (with noun) ـنِي (with verb)	أَفْعَلُ	فَعَلْتُ	أَنَا
ـنَا	نَفْعَلُ	فَعَلْنَا	نَحْنُ
فَعَلَـ جَرـ اسمـ	يَ تَ أَ نَ	تَ نَ تِ تُنَّ تُ نَا	

	Negative نهي	Imperative أمر
Singular	لاَ تَفْعَلِي	اِفْعَلِي
Dual	لاَ تَفْعَلاَ	اِفْعَلاَ
Plural	لاَ تَفْعَلْنَ	اِفْعَلْنَ

	Passive participle اسم مفعول	Active participle اسم فاعل
Singular	مَفْعُولَة	فَاعِلَة
Dual	مَفْعُولَتَان ، مَفْعُولَتَيْن	فَاعِلَتَان ، فَاعِلَتَيْن
Plural	مَفْعُولاَت	فَاعِلاَت

مَجْهُول Passive Voice			مَجْهُول Passive Voice
	تُفْعَلُ	فُعِلَتْ	هِيَ

बार बार आने वाले अल्फ़ाज़ (शब्द)

to, toward तरफ़	on पर	in में	with, in से, साथ	with साथ	about से, बारे में	from سے، ساتھ	for लिये
إِلَيه	عَليه	فِيه	بِه	مَعَه	عَنْه	مِنْه	لَه
إِلَيهُمْ	عَليهُمْ	فِيهُمْ	بِهُمْ	مَعَهُمْ	عَنْهُمْ	مِنْهُمْ	لَهُمْ
إِلَيكَ	عَليكَ	فِيكَ	بِكَ	مَعَكَ	عَنْكَ	مِنْكَ	لَكَ
إِلَيكُمْ	عَليكُمْ	فِيكُمْ	بِكُمْ	مَعَكُمْ	عَنْكُمْ	مِنْكُمْ	لَكُمْ
إِلَيَّ	عَلَيَّ	فِيَّ	بِي	مَعِي	عَنِّي	مِنِّي	لِي
إِلَينَا	عَلينَا	فِينَا	بِنَا	مَعَنَا	عَنْنَا	مِنَّا	لَنَا
إِلَيهَا	عَليهَا	فِيهَا	بِهَا	مَعَهَا	عَنْهَا	مِنْهَا	لَهَا

मानी याद रखने के लिये मिसालें (उदाहरण)

لَ: لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِين،	بِ: بِسْمِ الله
مِن: أَعُوذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطَان،	فِي: فِي سَبِيلِ الله
عَن: عَنِ النَّعِيم، رَضِيَ اللهُ عَنهُ	عَلَى: السَّلامُ عَلَيْكُمْ
مَعَ: إِنَّ اللهَ مَعَ الصَّابِرِين	إِلَى: إِنَّا لِلهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُون

यह, वह, ... (Demonstrative Pronouns)

this	यह	هٰذَا
these	यह सब	هٰؤُلآءِ
that	वह	ذٰلِكَ
those	वह सब	أُولـٰئِكَ
the one who	वह जो	الَّذِي
those who	वह सब जो	الَّذِينَ